ज्ञानदीप लावू जगी

पुणे नगर वाचन मंदिर

स्थापना : ७ फेब्रुवारी १८४८

email : pnvm1848@gmail.com
www.punenagarvachan.org

पुस्तकाचे नाव : भारतवर्षीय इतिहास

लेखक : पंडित बंशीधर

प्रकाशक : सिकंदर छापखाना, आगरा

प्रकाशन वर्ष : १८५६

मूळ ग्रंथ प्रत : शिक्षण प्रसारक मंडळी, पुणे

पुणे नगर वाचन मंदिर

अंकेक्षण (डिजीटायझेशन) प्रकल्प
अंकेक्षण रूपांतर - २०१९

भारतवर्षीय

इतिहास ॥

मिन्महाराजाधिराज पश्चिम देशाधिकारी

श्रीयुत लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर की

आज्ञानुसार ॥

साहिब डैरेक्टर आफ़ पबलिक इन्सट्रकशन

बहादुर के सररिश्ते में

पश्चिमदेशीय पाठशालाओं के विद्यार्थियों के लिये

पण्डित बंशीधर ने

तारीख़ हिन्द से हिन्दी भाषा में

उल्था किया

आगरा

सिकंदरे के छापे खाने में छापी गई ॥

सन १८५६ ई०

2nd Ed[illegible]
Pric[illegible]

दूसरी बेर १[illegible] पुस्तक
मोल ।/ [illegible]

954.71
Bah
9636

D.V.POTDAR
D00354

19

MAHARASHTRA KOSHA MANDAL LTD.
महाराष्ट्र कोश मंडळ लि. पुणे.

भारतवर्षीय

इतिहास ॥

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमदेशाधिकारी

श्रीयुत लेफ्टनेंट गवर्नर बहादुर की

आज्ञानुसार

साहिब डैरेक्टर आफ़ पबलिक इनस्ट्रक्शन

बहादुर के सररिश्ते में

पश्चिमदेशीय पाठशालाओं के विद्यार्थियों के लिये

पण्डित बंशीधर ने

तारीख़ हिन्द से हिन्दी भाषा में

उल्था किया

D.V.POTDAR
D00354

आगरा

सिकन्दरे के छापे ख़ाने में छापा गया ॥

सन १८५६ ई०

डॉ. म. म. द. वा. पोतदार
ग्रंथ संग्रह

ଡା୪୩୭

भारतवर्षीय इतिहास का

954.71
Bah

सूचीपत्र

अध्याय	आशय	पृष्ठ से	पृष्ठ लों
१	भरतखण्ड के भूगोल के बिषय में	१	४
२	भरतखण्ड के पुराने इतिहासों के बिषय में ..	४	२३
३	मुसलमान बादशाहों के बिषय में	२४	६६
४	अंगरेज़ बहादुर के राज्य के बिषय में	६६	१०७

9636
954.71 Bah
(D) 2464

भारतवर्षीय

इतिहास ॥

पहला अध्याय ॥

भरतखण्ड के भूगोल के वर्णन में ॥

भरतखण्ड के उत्तर में हिमालय पहाड़ है और पूर्व में ब्रह्मपुत्र जिसकी दूसरी ओर ब्रह्मा देश है और आग्नेय और नैऋत्य और दक्षिण में समुद्र है इस देश की लम्बाई कश्मीर से कन्याकुमारी तक अर्थात् उत्तर और दक्षिण के बीच १८०० मील है और चौड़ाई अटक के दाहने से उन पहाड़ों तक जो ब्रह्मपुत्र के पूर्व में हैं १५०० मील है भरतखण्ड के बीच में पूर्व से पश्चिम तक बिंध्याचल पहाड़ है उस से भरतखण्ड के दो भाग होगये हैं एक उत्तराखण्ड दूसरा दक्षिण भरतखण्ड उत्तराखण्ड के चार भाग हैं उन में से पहले भाग में वे देश हैं जिनके नदी नाले अटक नदी में जाकर मिले हैं और दूसरे भाग में वे देश हैं जिनके नदी नाले बहकर गंगा में आते हैं तीसरा भाग अटक नदी के पूर्व को

श्रोर जंगल रेतला है श्रोर चौथा भाग मध्यम भरत-खण्ड है ॥

पहला भाग जिसके नदी नाले अटक में जाकर मिले हैं वह इन दिनों में पंजाब कहाता है श्रोर पंजाब में जिहलम नदी के पूर्व को श्रोर जो देश हैं उनको धरती सम श्रोर उर्वरा है श्रोर जो देश उस नदी के पश्चिम को श्रोर है वह बेहड़ है श्रोर जिस स्थान में पांचों नदियां मिली हैं वहां की धरती रेतली है श्रोर पंजाब की पांचों नदियां ये हैं सतलज व्यासा रावी चिनाब जिहलम; श्रोर अटक नदी जिस पटपड़ में बहती है वह पहाड़ श्रोर जंगल से घिरा हुआ है श्रोर दूसरा भाग जिसके नदी नाले गंगा में जाकर मिलते हैं वह सब जगह से एकसा श्रोर बराबर है परंतु बीच में कुछ धरती ऊंची नीची है उस देश में हर एक प्रकार का नाज उपजता है श्रोर बंगाला देश भी उसी में मिला है गंगा के समीपी देशों में बहुधा भरतखण्ड के लोग चिरकाल से अपना निवास रखते हैं पहाड़ों की एक श्रेणी जिसको वहां के निवासी अर्बली पर्वत कहते हैं गुजरात देश की सीमा में विंध्याचल पहाड़ से मिलती है श्रोर दिल्ली श्रोर अजमेर से आगे दूर तक चला गया है इन पहाड़ों की पश्चिम की श्रोर बियाबान है श्रोर पूर्व की श्रोर मध्यम भरतखण्ड के देश हैं जिनकी धरती उस बियाबान से ऊंची श्रोर सम धरातल रूप है अर्बली पर्वत श्रोर अटक नदी के बीच सतलज से समुद्र तक

जितनी धरती है सब रेतली और ऊजड़ पड़ी है परंतु जोधपुर का प्रदेश और आग्नेय दिशा के देश की धरती उर्वरा है और माड़वाड़ देश में बहुधा धरती के बिभाग ऐसे भी हैं जिन में नाज उपजता है इन में सब से बड़ा टुकड़ा जैसलमेर के आस पास का है और देश बियाबान और समुद्र के बीच में है जिन लोगों का आना जाना सिंध और गुजरात में रहता है वे कच्छ देश में होकर जाते हैं ॥

चौथा भाग मध्यम भरतखण्ड सब भागों से छोटा है इस देश की धरती समुद्र के तल से कम से कम १५०० फ़ुट और अधिक से अधिक २५०० फ़ुट उंची है उसके पश्चिम की ओर अर्वली पर्बत है और दक्षिण में बिंध्याचल और पूर्व में बुंदेलखण्ड का पहाड़ है और जिस देश के नदी नाले गंगा में मिलते हैं उसकी धरती आग्नेय दिशा की ओर ढुलवां है उत्तराखण्ड की दक्षिण की सीमा बिंध्याचल पहाड़ है और नर्मदा नदी के घाटे की उस ओर समानांतर पहाड़ों की एक श्रेणी है जिसे सतपुड़ी बोलते हैं उसके आगे तापी नदी की घाटी की धरती नीची है और उसके सिवाय दक्षिण के शेष देश ऊंचे हैं और इस भाग का आकार त्रिकोण कासा है और इसका धरातल बराबर है मध्यम भरत खण्ड के धरातल के जो पहाड़ दक्षिण की ओर चले गये हैं उनको घाट कहते हैं और उनके और समुद्र के बीच में नीची धरती के जो देश हैं उनकी धरती

कहीं ऊंची और कहीं नीची और कहीं ऊसर और कहीं उर्वरा है ॥

दक्षिण भरतखण्ड के दो भाग हैं पहला भाग नर्मदा नदी से गोदावरी नदी तक और दूसरा भाग गोदावरी के दक्षिण में है और उसके कई प्रदेशों में से उत्तर और पूर्व का प्रदेश बड़ा है परंतु उस में खेती और बस्ती कहीं २ हैं और नैऋत्य दिशा में पटपड़ा भी है और बस्ती भी है दक्षिण में ये देश हैं महाराष्ट्र कर्णाटक द्रविड़ तैलंग और संपूर्ण भरतखण्ड का क्षेत्र फल अनुमान बीस लाख मील वर्गात्मक है और मनुष्य संख्या अनुमान से १४००००००० है ॥

दूसरा अध्याय ॥

भरतखण्ड के पुराने इतिहासों के वर्णन में ॥

पुराने इतिहासों के ठीक न मिलने के कारण निश्चय नहीं होता है कि आदि में कौन से लोग भरतखण्ड के निवासी थे परंतु इस में भी कुछ संदेह नहीं है कि प्राचीन काल से हिंदू जाति के लोग बसे हैं और उन्हीं के नाम से भरतखण्ड का दूसरा नाम हिंदुस्तान भी ठहरा है कभी ये लोग मिसर देश से आये होंगे और मुख्य निवासियों में से जो शेष रह गये उन सब ने पहाड़ और जंगल में जाकर निवास किया फिर पश्चिम से वेद पढ़े हुए लोगों ने भरतखण्ड में आकर जो लोग

पहले से इस देश में बसते थे उनको अधीन कर लिया॥

भरतखण्ड में चारों वर्ण पहले इतने बिस्तार के बीच में न बसते थे जितने में अब बसते हैं बरन उस समय में उनके निवास करने का केवल एक छोटासा देश था यह बात मनु.के दूसरे अध्याय में लिखी है कि सरस्वती और दृषद्वती इन दो नदियों के बीच जो देश है उसको ब्रह्मावर्त्त कहते हैं और इसको देवदेश अर्थात् देवताओं का देश जान्ते हैं और ब्रह्मावर्त्त के सिवाय कुरुक्षेत्र मत्स्य पांचाल शूरसेन इन देशों को ब्रह्मर्षिदेश कहते हैं और पवित्र जान्ते हैं और हिमालय पहाड़ के दक्षिण और बिंध्याचल के उत्तर के बीच जो देश है उसको विनशन देश कहते हैं वह दिल्ली से वायव्य दिशा में है और वहां से पूर्व की ओर प्रयाग से पश्चिम की ओर जो देश है उसको मध्यदेश कहते हैं॥

पूर्व समुद्र से पश्चिम समुद्र तक और हिमालय की सीमा से बिंध्याचल की सीमा के बीच जो देश है उसको आर्यावर्त्त कहते हैं यह देश भी पुण्य देश गिना जाता है और जिस देश में काला हरिण उत्पन्न होता है उसको यज्ञ करने के योग्य समझते हैं पहले उन्हीं देशों में चारों वर्ण बसे और निश्चय होता है कि चारों वर्ण के लोग अर्थात् ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र आकर पहले सिंधु नदी से प्रयाग तक बसे थे और जितने देश में चारों वर्ण के लोग बसते थे उस में सूर्यबंशी

और चंद्रबंशी राजा न्यारा २ राज्य करते थे और महा-राज ब्रह्माजी के दो पुत्र थे पहले का नाम दक्ष दूसरे का नाम अत्रि था उन से दो राजाओं के वंश चले इस प्रकार से कि दक्ष से सूर्य और अत्रि से सोम उत्पन्न हुए इसी प्रकार यूनानवाले भी बड़प्पन के लिये अपने राजाओं की उत्पत्ति सूर्य और चंद्रमा से मान्ते हैं ॥

सूर्यबंशी राजाओं में सब से पहला राजा इक्ष्वाकु हुआ उसकी राजधानी अयोध्या पुरी थी उसके पीछे उस पुरी में उसकी संतान राज्य करती रही उन में श्रीरामचंद्र विख्यात हुए इक्ष्वाकु से पीछे रामचंद्र की ख्याति हुई उनके समय से अब तक लग भग तीन हज़ार बरस ब्यतीत हुए हैं और रामचंद्र अपनी सौतेली माता की आज्ञा से युवराज्य से पहले बनबास को गये और जब बन में से रामचंद्र की रानी सीता को लंका का राजा रावण हरकर लेगया तब रामचंद्र भी उसका खोज लगाते हुए रावण के पीछे २ चल दिये तो मार्ग में सुग्रीव और हनुमान् मिल गये उनका बल पाकर रामचंद्र ने रावण को मार वहां का राज्य लेकर उसके भाई विभीषण को दिया ॥

काव्यों में रावण को राक्षस कहकर उसके दस शिर वर्णन किये हैं और सुग्रीव आदि को बंदर, सो यह केवल काव्य की अद्भुतता है बहुधा ऐसा जान पड़ता है कि वे लोग ब्यवहार में चतुर न थे क्योंकि वे बनबासी थे इस कारण उन्हें बंदर और राक्षस कहते हैं ॥

जब रामचंद्र की सेना ने दक्षिण दिशा को जीता तब अयोध्या के लोग जाकर वहां के देशों में बसे और जो धरती वहां बिन जुती पड़ी थी उसे वे लोग जोतने बोने लगे और अपने चैन चान से रहने लगे यह बात सब जगह दक्खन में फैलगई तिस पीछे रामचंद्र दक्खन से फिरकर अयोध्या को आये और वहां का राज करने लगे परंतु कवीश्वर लोगों ने उस राज्य का बहुत बढ़ाके बर्णन किया है और भंरतखण्ड के रहनेवाले लोग कहते हैं कि रामचंद्र विष्णु का कलाअवतार हैं॥

जब रामचंद्र परलोक को सिधारे तो उनका बड़ा बेटा कुश राजसिंहासन पर बैठा उसके पीछे और बहुत से राजा हुए परंतु वे कुछ बहुत प्रसिद्ध न हुए॥

इक्ष्वाकु का दूसरा पुत्र निमि मिथिलापुरी अर्थात् तिरहुत का राजा था उसका पुत्र जनक था उसकी पुत्री सीता थी जो कि रामचंद्र को विवाही गई॥

चंद्रबंशी राजाओं में सब से पहला पुरूरवा नाम राजा था उसकी राजधानी प्रयाग थी उसके पीछे उस का पुत्र आयुर्ज्येष्ठ अपने पिता के राज्य पर बैठा उसके दो पुत्र नहुष और क्षेत्रवृद्ध थे पहला नहुष दूसरा क्षेत्र-वृद्ध था नहुष ने पिता के पीछे विख्यात स्थान प्रयाग में राज्यपद पाया और क्षेत्रवृद्ध ने अपने बाहुबल से काशी में अपना नवीन राज्य स्थापन किया॥

नहुष के पीछे उसका पद ययाति ने पाया उसके यदु अणु तुर्वसु दुह्य और पुरु ये पांच पुत्र थे ययाति ने

अपने और पुत्रों से मन खींच छोटे पुत्र पुरु को अपना पद दिया उसी की संतान पुरुवंशी कहाई ॥

तुर्वसु के बंश में पांड्य केरल और चोलक ये प्रसिद्ध हुए उनके नाम से दक्षिण के देशों के नाम प्रसिद्ध हुए हैं ॥

दुह्य के बंश में गांधार था ॥

अणु के बंश में अंग बंग मद्र कलिंग और पुंड्रक ये बिख्यात हुए इनके नामों से भी देशों के नाम बिख्यात हैं इसका कारण यह है कि ययाति की संतान में से यवनों के रहने का देश जो जिसने पहले लिया वह देश उसी के नाम से प्रसिद्ध हुआ ॥

ययाति का सब से छोटा पुत्र पुरु अपने पिता की गद्दी पर बैठा वही पुरु भरतखण्ड के बिख्यात पुरुवंशी राजाओं की जड़ था उसी के बंश में भरत हुआ जो भरतखण्ड का एक ही राजा था उसी के नाम से यह भरतखण्ड कहाता है ॥

जब कि पुरु के पीछे बीस पीढ़ी हो चुकीं तब हस्ती नाम राजा हुआ उसने हस्तिनापुर के नगर को अपनी राजधानी किया ॥

एक समय में सूर्यबंशियों की शक्ति बढ़ी तो चंद्रबंशी उनके डर से अपना २ स्थान छोड़ पश्चिम दिशा को चले गये तिस पीछे हस्ती नाम राजा का पड़पोता कुरु उपजा यह वही कुरु था जिसके नाम से मरु देश में कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध हुआ है ॥

कुरु के पीछे शांतनु नाम राजा तेरहवीं पीढ़ी पै हुआ उसके भीष्म बिचित्रवीर्य्य चित्रांगद ये तीन पुत्र थे भीष्म ने अपनी युवराज पदवी निज छोटे भाई को दी जब कि चित्रांगद रण में मारा गया तब विचित्रवीर्य्य आप ही राज्य करने लगा॰॥

राजा विचित्रवीर्य्य बिना संतान मरा तब उसकी स्त्री व्यास के घर में रही और उसके दो पुत्र भये एक का नाम धृतराष्ट्र दूसरे का नाम पांडु था और जो सत्यवती फिर जाकर शांतनु राजा की रानी हुई थी सो ही व्यास की माता थी और पिता पराशर था इस कारण विचित्रवीर्य्य और व्यास भाई थे इसी हेतु से व्यास ने अपने भाई विचित्रवीर्य्य की संतान उत्पन्न करने के लिये उसकी स्त्री को अपने घर में रक्खा ॥

वह व्यास भरतखण्ड में ऐसा विख्यात हुआ कि यहां के लोग अब तक उसका नाम जानते हैं उसी ने वेद के मंत्रों को इकट्ठा करके क्रम से रक्खा और उसी ने निज शिष्य वैशंपायन पैल सुमंतु और जैमिनि को वेद पढ़ाया और उन्हों ने भी अपने २ शिष्यों को वेद पढ़ाया पैल ने अपने चेलों को ऋग्वेद पढ़ाया और वैशंपायन ने यजुर्वेद और जैमिनि ने सामवेद लोगों को सिखाया और सुमंतु ने अथर्व वेद का पढ़ाना अंगीकार किया उन्हों ने और उनके शिष्यों ने वेदों की शाखा कीं और उन शाखाओं के कारण से ब्राह्मणों के अलग २ गण होगये यद्यपि वेदों में ऐसे बहुत से शब्द

हैं जो निरुक्त में पाये जाते हैं परंतु ब्राह्मण इन दिनों में वेद का बहुत सा अभ्यास नहीं रखते इस कारण उसका अर्थ भली भांति नहीं जानते और लोग वेद से वैसा कर्म भी नहीं करते हैं जैसा पहले होता था और यहां के सब शास्त्रों से प्राचीन वेद है उस में जो संस्कृत वाणी है वह बिगड़ते २ और ही भांति की हो गई है ॥

व्यास ने पहले पहल भारत की रचना की तिस पीछे उसके शिष्य लोमहर्ष ने अपने चेलों को भारत की रचना सुनाई व्यास ने पुराण विद्या शुकदेवजी को बताई और दूसरे शिष्यों को जगत की रचना से इतिहास विद्या सिखलाई ॥

सब पुराण व्यास के ही किये हुए नहीं हैं क्योंकि कोई २ पुराण औरों का कहा हुआ है जैसा कि विष्णुपुराण पराशर का बनाया हुआ है कुछ यह भी नहीं कि सब पुराणों की रचना अगले ही समय में हुई थी क्योंकि कोई २ पुराण नये भी हैं जैसे ब्रह्मवैवर्त्त और भागवत इनके नवीन होने में कुछ संदेह नहीं है ॥

जब तक व्यास के पुत्र धृतराष्ट्र और पांडु बालक रहे तब तक भीष्म ने राज काज किया और पांडु जब युवा भये तब अपने पांचों पुत्र पांडवों को छोड़ अपनी स्त्री को संग ले हिमालय को चले गये पांडवों का जन्म देवताओं से कहते हैं क्योंकि वे बड़े बीर थे उन में सत्य के प्रभाव से युधिष्ठिर विख्यात था और बल के कारण भीम; वे पांडव हस्तिना पुर को गये जहां का राजा

धृतराष्ट्र था उन्हों ने एक ओर देश पाया उस में इंद्र प्रस्थ नाम एक नया नगर बसाया जिसे अब लोग दिल्ली कहते हैं ॥

संयोग से पांडव और कौरव के बीच आपस में बड़ा द्वेष बढ़ा उसका परिणाम यह हुआ कि कुरुक्षेत्र की धरती पे उन्हों में एक घोर युद्ध हुआ उस में पांडव जीते और कौरव हारे यहां तक हुआ कि धृतराष्ट्र का कुनवा दुर्योधन समेत पांडवों के हाथ से मारा गया उस युद्ध में दोनों ओर सहायक बहुत से राजा थे और पांडवों के पक्ष में द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण भी थे पांडवों के शत्रु के पक्ष में जो सेना थी उस में सेनापति भीष्म द्रोण कर्ण बलवान् और महाबीर थे कौरव और पांडवों का युद्ध अठारह दिन तक हुआ यह बात भरतखण्ड में प्रसिद्ध हुई फिर यह बात ऐसी बढ़ गई कि जैसी अब सुन्ने में आती है ॥

उसके पीछे थोड़ा ही काल गया होगा कि राजा युधिष्ठिर राज्य छोड़ अपने भाइयों समेत हिमालय में जा गला और उस राज सिंहासन पर परीक्षित अर्जुन का पोता बैठा उस से थोड़े काल पीछे गंगा के चढ़ाव से हस्तिनापुर डूबकर मटिया मेट हो गया ॥

ययाति के ज्येष्ठ पुत्र के दो सुत थे उन में से एक के कुल में वसुदेव और देवक जन्मे और जिन्हें विष्णु का अवतार कहते हैं उन्हों ने भी यदुकुल में बसुदेव और देवकी से जन्म पाया उग्रसेन ने बसुदेव के पिता

का राज्य छीनकर अपने अधीन कर लिया वह उग्रसेन देवक का भाई था उग्रसेन से उसके पुत्र कंस ने उसका राज्य छीन लिया उसे श्रीकृष्ण ने अपनी युवा अवस्था में मारा और अपने पुरखों की जो राजधानी मथुरा थी उसका राज्य आप ले लिया ॥

यह बात सुनकर कंस का सुसरा मगध देश का राजा जरासंध था वहां आया और श्रीकृष्ण को युद्ध में जीतकर देश से बाहर कर दिया ॥

जरासंध का सहायक पश्चिम का रहनेवाला एक यवन जाति का राजा था यह बात भारत के सभा पर्व्व में लिखी है और राजसूय पर्व्व के तेरहवें अध्याय में पांच सौ अठहत्तरवें श्लोक का यह आशय है कि पश्चिम दिशा में जो मरु और नरक देश हैं वहां बड़ा बलवान् यवनाधिप राज्य करता है और भागवत में जो यवनासुर लिखा है उसका यह आशय है कि मनुष्य का रूप अद्भुत वर्णन करके उसे असुर ठहरा दिया है इस हेतु से निश्चय होता है कि भारत पुराने समय का बना है और भागवत नवीन बनी है क्योंकि जिस काल में भारत बना था उस समय धरती पै महम्मद के मत का खोज न था और भरतखण्ड की प्रजा यवनों से कुछ द्वेष न रखती थी वरन उनकी बुद्धि और शूरता की प्रशंसा करती थी ॥

भारत में भी लिखा है कि यवन लोग बड़े बुद्धि-मान् और शूर वीर हैं परंतु जब मुसलमानों ने पछांह

से आकर भरतखण्ड के लोगों को दुःख दिया तब से उन्हों ने उनका नाम यवनासुर ठहराया परंतु उन में और यवनों में बड़ा भेद है ॥

मुसलमानों ने जो यहां के लोगों को दुःख दिया था इसलिये ये उनको बुरा कहते थे इस से निश्चय होता है कि उनके आने से पीछे भागवत बनी है क्योंकि जहां यवनों का वर्णन करते हैं वहां यवन शब्द के संग असुर यह उपनाम भी लगा देते हैं ॥

निदान जब श्रीकृष्ण शत्रु का डर मानकर मथुरा छोड़ गुजरात देश में पहुंचे वहां जाकर समुद्र के तीर पर एक पुरी बसाई और उसका नाम द्वारिका रक्खा जब पांडव और कौरवों में युद्ध हुआ था तब गुजरात की राह होकर पांडवों की सहायता को गये और वहां भारत का युद्ध हो चुकने के पीछे जब श्रीकृष्ण द्वारिका को गये तब यादवों में बड़ा क्लेश फैला और उस क्लेश का परिणाम यह हुआ कि वे सब आपस में कटमरे और एक भील ने भ्रम से वन में श्रीकृष्णचन्द्र को भी मारा और ऐसा कहते हैं कि वह द्वारिका समुद्र में डूब गई ॥

अब भरतखण्ड में श्रीकृष्णचन्द्र को भगवान् के समान जानते हैं और उनके चरित्रों को बहुत मन लगाके पढ़ते हैं और उनका आराधन तन मन से करते हैं और जैसा परमेश्वर में चित्त लगाना चाहिये वैसा लोग श्रीकृष्णचन्द्र में लगाते हैं उसका कारण यह है कि उनके चरित्र पहले भी भरतखण्ड में प्रसिद्ध थे परंतु भागवत

की रचना से और भी अधिक लोग चित्त उनकी ओर लगाते हैं और कृष्णचन्द्र की बुद्धि न्याय और बीरता की सब लोग प्रशंसा करते हैं ॥

जब श्रीकृष्णचन्द्र जगत को छोड़ परलोक को सिधारे तिस पीछे उनका यश दिनों दिन ऐसा फैला कि जिस से लोग मूल बात को भूल अपनी बुद्धि के चमत्कार से चित्र विचित्र वर्णन करने लगे कारण यह है कि वे कवि जन इतिहासविद्याः न जानते थे ॥

साधारण से लोग कहते चले आते हैं कि कौरव और पांडव चारों युगों में से द्वापर के अंत में उत्पन्न हुए उसी समय में उनकी बीरता और शूरता अधिक प्रसिद्ध हुई और उसी समय में श्रीकृष्णचन्द्र भी थे परंतु कल्हण कवि ने निज ग्रन्थ राजतरंगिणी के बीच लिखा है कि यह बात लोगों ने अज्ञान से कही है सच यह है कि कलियुग के जब छः सौ त्रेपन वर्ष जाचुके तब कौरव और पांडव भये थे और कई परिनिष्ठितों के बिचार से ऐसा जान पड़ता है कि कल्हण कवि ने जो काल कहा है उस से भी बहुत पीछे कौरव पांडव और श्रीकृष्णचन्द्र भये थे ॥

कुरुक्षेत्र में महाभारत के युद्ध होने के पीछे भरत-खण्ड में मगध देश के राजा का राज्य बड़ा प्रतापी गिना गया और वह राज्य चिर काल तक वैसाही बना रहा उस देश का राजा बड़ा पराक्रमी जरासंध था उसे श्रीकृष्ण की सहायता पाकर पांडवों ने मारा तिस पीछे

उसके पुत्र सहदेव ने राजगद्दी पाई तिसके उपरांत उस कुल के बीस और राजा हुए उन में सब से पिछला रिपुंजय था उस राजा के शुनिक मंत्री ने अपने स्वामी को मार निज पुत्र को राज सिंहासन पर बैठाया और उसके पीछे चार राजा उसी कुल के भये उन राजाओं के पीछे शिशुनाग नाम राजा हुआ वह दूसरे कुल का था फिर उसके कुल के दश राजा हुए उन्हों ने भी मगध देश के राज्य को खूब भोग किया परंतु बिक्रम के संवत् से चार सौ बरस पहले फ़ारस के रहनेवाले दारा ने बड़ी सेना संग लेकर भरतखण्ड के पश्चिम भाग को दबाकर मगध के राजाओं को जाजीता और उन से बरसौड़ी कर लेना ठहरा लिया ॥

उन्हीं दिनों में मगध देश के राजा के घराने में शाक्यसिंह गौतम उत्पन्न हुआ उसने बौद्ध धर्म का प्रचार किया और वेद जातिधर्म और मूर्त्तिपूजन उड़ा दिया और निज मत स्थापन किया कि वह मत बहुत से लोगों के स्वीकार करने से प्रबल हो भरतखण्ड में सर्वत्र व्याप्त होगया निदान बिक्रम के संवत् ८०० में वह मत नष्ट भी होगया अब भरतखण्ड में जो लोग बौद्ध प्रसिद्ध हो रहे हैं वे बौद्ध नहीं हैं परंतु जैन हैं उनके और बौद्ध के मत में अंतर है ॥

जब ब्राह्मण प्रबल हुए तब उन्हों ने अपने बल से पुराने बौद्धों को भरतखण्ड से निकाल दिया यह बात प्रबंधों के देखने से जानी जाती है परंतु भरतखण्ड के

आस पास के जो देश हैं जैसा ब्रह्मा लंका आदि उन में अभी तक बौद्ध लोग रहते हैं ॥

पहले जो हमने शिशुनाग कुल के दश राजा लिखे उन में महानन्दी राजा पिछला था उसका बेटा नन्द वह शूद्रकन्या से उत्पन्न हुआ था परंतु पिता के पीछे राजपद उसने ही पाया उसके पीछे उसके वंश के नौ शूद्रों ने राज्य भोगा उन में से पिछले राजा को मंत्री चाणिक्य ने मारडाला और राजा के भाई बंधों में से चन्द्रगुप्त को गद्दी पर बैठा दिया जिसका प्रसंग यवनों के बनाये हुए प्राचीन प्रबंधों में भी लिखा है कि मगध देश का राजा चन्द्रगुप्त बड़ा बलवान था उसने फ़ारस के अधिकारी सलूक से मेल किया और उस यवन की कन्या से विवाह करके यह ठहरा दिया कि तुम को बरसौड़ी पचास हाथी दिया करेंगे ॥

सलूक का भेजा हुआ एक दूत मृगसानी नाम चन्द्रगुप्त के पास आया और मगध देश की राजधानी पटने में बहुत काल तक ठहरा उसने पटने का ऐसा वर्णन किया कि जिसके देखने से लोगों को जान पड़े कि उस राजधानी का बड़ा विभव होगा सलूक से पहले सिकन्दर नामी एक यवन बड़ा शूर बीर था वह अपनी सेना लेकर भरत खण्ड पै चढ़आया यह बादशाह यद्यपि थोड़ेसे देश का अधिकारी था परंतु तरुणाई की उमंग में फ़ारस के बादशाह दारा से, जो बहुतसी सेना का स्वामी था, बराबर तीन लड़ाई लड़कर उसे जीत लिया ॥

कालिदास कवि ने नीति लिखी है कि मनुष्य चाहे बलवान् भी हो तो भी उसको उचित है कि ऐसे शत्रु पर चढ़ाई करे जो अपने से निर्बल हो इस अवसर में यह दृष्टांत है कि आग वायु के बल से यद्यपि दूनी प्रचंड होती है परंतु उस दशा में भी पानी को कभी नहीं चाहती है मनुष्य को उचित है कि पहले अपनी और शत्रु की शक्ति का बलाबल जांचे पीछे उस पर चढ़ाई करे और जो शत्रु को बलवान् देखे तो चुप हो कर बैठ रहे परंतु सिकन्दर ने अपनी शूरता और बीरता के गुमान में इस नीति को न मानकर अपने से बलवान् शत्रु को जीत लिया ॥

जब सिकन्दर इस देश में चढ़ आया तो कश्मीर के आस पास के कितने एक राजा उसके प्रताप और ऐश्वर्य को देख आपसे आप आधीन हो गये ॥

और जब वह बितस्ता नदी के किनारे पर पहुंचा तब उसके रोकने के लिये दूसरे तीर पर पौरव राजा की सेना लड़ाई के बिचार से राह को रोककर पड़ी थी यह व्यवस्था देखकर साहसी सिकन्दर ने रात्रि के समय नदी पार होकर उस राजा को भी जाजीता परंतु उस चमत्कारी नृप की शूरता और प्रतिष्ठा और बुद्धि नीति को देखकर उसका राज्य उसी को सौंप दिया ॥

अवश्य शत्रु की दृष्टि में गुण भी अपगुण हो जाता है परंतु पौरव राजा में ऐसे गुण थे कि वे शत्रु को भी प्यारे लगे और सिकन्दर में भी जितने गुण

उत्तम राजाओं को चाहियें वे सब विद्यमान थे ॥

बुद्धिमानों ने कहा है कि जो राजा निरी नीति को बिचारा करते हैं वे कायर हैं और जो निरी शूरता में रहते हैं वे पशु हैं इस से मनुष्य को उचित है कि इन दोनों गुणों को साधारण रीति से स्वीकार करे ॥

यह भी है कि वैभव रूप संपत्ति इन में से एक के होने से भी मनुष्य को मद हो जाता है परंतु जो उत्तम जन होते हैं उन में ये सब बातें होने पर भी उनके मन को नहीं बहका सक्तीं ॥

सिकन्दर को दिनों दिन ऐसी संपत्तें प्राप्त थीं कि जो मनुष्य के मन को आकर्षण करलें परंतु उस शूर बीर का मन वैसे पदार्थों के योग से भी नहीं डिगता था जैसे कि दृढ़ जड़वाला वृक्ष वायु के ढकोलों से नहीं उखड़ता है ॥

जब सिकन्दर की सेना के लोग जो बितस्ता नदी के तीर पर थे उन्हों ने आगे पांव बढ़ाना न चाहा और निज घर देखने का मनोरथ किया तो वह बादशाह वहां से उलटा फिरा और फ़ारस देश में जाकर मरा उस समय उसकी अवस्था बत्तीस बर्ष की थी ॥

यद्यपि वह बहुत थोड़ा जिया परंतु इतनी ही अवस्था में उसने ऐसी कीर्त्ति पाई जो सदा को प्रसिद्ध रहेगी यह राजा दूसरों के देश जीतने में बड़ा जयशाली था ॥

यद्यपि कविजनों ने बड़ी प्रशंसा लिखी है परंतु जब तक जो किसी के गुण और अपगुण नहीं जानते तब

तक वे क्या लिखेंगे यथार्थ यह है कि उदारता शूरता बुद्धिमानी और चतुराई आदि जितने सद्गुण प्रसिद्ध हैं ये सब उस में स्वाभाविक थे परंतु समीचीन शिक्षा पाने से वे और भी अधिक फैले सिकन्दर पृथिवी भर के राज्य और प्रबंध का बिचार रखता था और सब धरती को अपना ही भाग समझता था इसलिये अन्याय से भी धरती के लेने में ढील नहीं करता था ऐसे शूर बीर को महात्माओं की गणना में नहीं गिनना चाहिये क्योंकि उत्तम जन वे ही कहाते हैं जो कि इन्द्रिय और मन को वश करलेते हैं॥

सिकन्दर का वृतांत सब जगह के इतिहास वेत्ताओं ने लिखा है परंतु हिन्दुस्तान के पुराने काव्यों में उसका कुछ प्रसंग नहीं है और इसका कारण वही है जो कल्हण कवि ने अपनी राजतरंगिणी पोथी में लिखा है कि आगे ऐसे कवि न थे जो पुराने लोगों का यथावस्थित वृतांत बनाकर लिख सकते इसी कारण से अगले लोगों का समाचार निश्चय नहीं होता है जो यहां कोई कवि होता तो निस्सन्देह सिकन्दर के आने के समाचार लिखता क्योंकि जो शत्रु इस देश के जीतने के लिये आया था और जिसके आने से संपूर्ण देश में हाहाकार मच गया उसका प्रसंग किस प्रकार न लिखा जाता यद्यपि सिकन्दर का नाम यहां के लोग नहीं जानते परंतु यह बात प्रसिद्ध है कि इस देश में कोई यवनों का राजा आया था और जिन यवनों ने सिकन्दर को

चढ़ाइयों का बर्णन किया है उन्हों ने भरतखण्ड के प्रसंग में लिखा है कि यवन यहां आये उन्हों ने देखा कि इस देश के लोगों की चाल और चलन और ही प्रकार का है और यहां के रहनेवाले मांस नहीं खाते हैं उनकी देह दुबली पतली होती है और वे कानों में कुण्डल और श्वेत बस्त्र पहनते हैं और प्रधानों के सिर पर छत्र रखने की चाल है और लोग दुधारी तलवार बांधते हैं और ऐसी कमान रखते हैं जो पांवों से खिंचती है और जंगली हाथियों के पकड़ने के उपाय जो अब हैं वे उस समय में भी थे इसी तरह यहां की दीमक का मुंह भारी होना और ताड़ और बड़ वृक्ष की दीर्घता उसी समय से प्रसिद्ध है ॥

लिखा है कि ये लोग माथों में चंदन लगाते हैं और उन में सैकड़ों जातें हैं और लड़के लड़कियों के शादी विवाह बिशेष कर अपनी ही जाति के भीतर लड़कपन में कर देते हैं इस बात से निश्चय होता है कि भरतखण्ड में जो अब चाल है वही अगले समय में भी थी ॥

सिकन्दर की चढ़ाई के पीछे यवनों ने बाल्हीक देश में और सिन्धु नदी के तीर पर अपना एक नवीन राज्य स्थापन किया और बाल्हीक देश के जो राजा थे वे सिन्धु नदी के पूरवी किनारे पर पंजाब देश में राज्य करते थे अब तक भी उन देशों में पुराने रुपये मिलते हैं उन में यवनों के अक्षर और राजाओं की मूर्त्ति होती है ॥

शक जाति के राजाओं ने उत्तर की ओर से चढ़ाई करके वहां के राजाओं को नष्ट कर दिया उस समय में सिन्धु नदी के तीर के कुछ देश शकों ने अपने आधीन कर लिये थे और वहां उनका राज्य बहुत काल तक रहा॥

राजा चंद्रगुप्त की वंशावली और मगध देश का संक्षेप वृत्तांत इस तरह पर है कि चंद्रगुप्त के वंश में दस मौर्य राजा हुए उन सभों ने उसी एक जगह राजधानी रक्खी उनके पीछे शुंग उपनाम के दस राजा हुए उस समय तक वहां के मंत्री कई राजाओं को मार चुके थे इस कारण से मगध देश के राज्य की शोभा और प्रतिष्ठा घट गई उनके पीछे राजा बिक्रम के राज्य का यश जगत में फैला उसकी राजधानी उज्जेन थी॥

कवियों ने द्रव्य के लोभ से राजा बिक्रम के प्रताप और पराक्रम की बहुत प्रशंसा की है और इसी से वह लोक में प्रसिद्ध हुआ परंतु इस में संदेह नहीं है कि शक जाति के राजाओं को, जो भरतखण्ड पर चढ़ाई किया करते थे, रोक दिया बरन उनको जीत कर अपने आधीन कर लिया इसी कारण से उसका उपनाम शकारि हुआ उसकी सभा में बहुत पण्डित और चतुर थे और उन्हों ने उसकी प्रशंसा अति ही बढ़कर के की है अर्थात् जैसे काम और युद्ध ग्रंथों में लिखे हैं वैसे यथार्थ उस से नहीं बन पड़े॥

लोग कहते हैं कि राजा बिक्रम में दैवी शक्ति थी और वैताल उसके आधीन था ये सब बातें बनावट की

हैं और जब साधारण लोग अचरज की बात सुनकर हट्ट भर अपनी ओर से बनावट करते हैं तो कवि लोग उस में अपनी कविता को क्यों न ख़र्च करेंगे सब तरह से उचित यह है कि मनुष्य जो समाचार सुने उस में अपनी ओर से नोन मिरच न मिलावे निदान राजा विक्रम के पीछे उस राज्य की प्रतिष्ठा और विभव फीका होगया परंतु पीछे उसी राजधानी का राजा शालिवाहन ऐसा प्रसिद्ध हुआ कि उसके नाम से जो अब संवत् प्रसिद्ध है उसका प्रचार हुआ उसके पीछे हिन्दुस्तान में छोटे २ राज्य होगये और उन्हों में मत आदि का झगड़ा फैलने से आपस में बड़ा द्वेष बढ़ा ॥

पहले राजा विक्रम के डर से शक जाति के राजा भरतखण्ड में नहीं आसकते थे परंतु उसके पीछे उस जाति के लोग झुंड बांध २ कर आने लगे जब शक देश के राजाओं ने यहां अधिकार पाया तो उन लोगों से राजपूतों की उत्पत्ति हुई यह बात ग्रंथों से जान पड़ती है और पुराणों में क्षत्रियों का जो पुनर्जन्म लिखा है उसका आशय कुछ छिपा हुआ और संदिग्ध है ठीक निश्चय नहीं होता कि क्या है ॥

पुराणों में यह लिखा है कि अर्बुद पर्वत जिसे अब आबू कहते हैं उसके ऊपर अग्निकुण्ड में से मुनियों के मंत्रों के प्रभाव से क्षत्रिय जाति के चार मनुष्य उत्पन्न हुए इस कथा से निश्चय होता है कि यहां कुछ हाल छिपा है ॥

जो चार क्षत्रिय कुण्ड से उत्पन्न हुए थे उन में से हर एक ने अपने २ राज्य गुजरात और क़न्नोज और दिल्ली और मालवे में न्यारे २ ठहराये और राजा बिक्रम के ग्यारह सौ संबत् के पीछे मालवे में प्रमर बंशी क्षत्रियों में राजा भोज उत्पन्न हुआ वह क्षत्रियों में बड़ा प्रतापी और यशस्वी हुआ था और प्रबंधों के देखने से यह भी निश्चित होता है कि वह आप पण्डित और बुद्धिमान् और गुणवानों का ग्राहक था ॥

इस इतिहास से जान पड़ता है कि पहले भरतखण्ड के राजाओं की कुछ बिशेष शक्ति न थी और उनके राज्य भी कुछ बड़े न थे तिस पीछे फ़ारस के यवनों ने उन पर बारंबार चढ़ाइयां कीं उनके आगे इन राजाओं ने ऐसी हिम्मत हारी कि उन से कभी साम्ना न कर सके ॥

तीसरा अध्याय ॥

मुसलमान बादशाहों के बर्णन में ॥

सन पांच सौ उनहत्तर ईसवी में अरब देश के बीच जो मक्कह नगर है उस में मुसलमानी मत का मुख्य चलानेवाला महम्मद उत्पन्न हुआ उसने चालीस बरस की अवस्था में प्राप्त होकर दूतता का दावा किया और यह बात प्रसिद्ध कर दी कि मैं ईश्वर का दूत हूं इसलिये कि सब मनुष्यों को मुसलमानी मत में ले आऊं तो उसने बहुधा अरब के रहनेवालों को अपनी मधुरता और गंभीरता से शिष्य करके एक प्रबल सेना इकट्ठी की इस निमित्त के लिये कि अन्य जाति के लोग भी उनकी आधीनताई और मुसलमानी मत में आ जावें और महम्मद ने अपने जीते जी बहुत लड़ाइयां कीं और उन में लगातार जीत भी पाता रहा उसके पीछे ख़लीफ़ों ने भी बड़ी चौकसाई और चतुराई से उसी तरह राज्य किया और मुसलमानों को मुसलमानी मत के प्रारंभ करने से यही मनोरथ था कि सब दुनिआ में एक ही राज्य हो जावे और सब लोग एक मत पर चलें और प्रबंध और धर्म का एक ही क़ानून जारी हो और सब जगह केवल एक ही नबी माना जावे निदान ये लोग स्वाभाविक शूरता और मत के पक्ष से हर ओर के देशों में इतने थोड़े समय में ऐसे बलवान् होगये कि उनकी समानता और किसी जाति के इतिहास में नहीं

पाई जाती कि देश के देश और राज्य के राज्य उनके वश में आगये और वहां के लोग मुसलमानी मत में चलने लगे॥

महम्मद के मरने पीछे दूसरा ख़लीफ़ह उमर हुआ उसने फ़ारस देश को जीत करके रोददजले के सिरे पर बसेरे की जड़ इस बिचार से डाली और उसको बसाया कि गुजरात और सिंध के व्योपार से मुसलमानों को कुछ लाभ हो और एक सेना भरतखण्ड की ओर भेजी उस से पहले लड़ाई अरवर पर हुई उस में वह सेना हार गई और हिंदू जीते और ख़लीफ़ह वलीद के समय से पहले मुसलमानों ने भरतखण्ड पर चढ़ने से कुछ फल नहीं उठाया परंतु ख़लीफ़ह वलीद ने सन् ७०५ और ७१५ ईसवी के बीच में केवल सिंध देश ही नहीं जीता बरन गंगा के तीर तक पहुंचकर भरतखण्ड के बहुधा राजों को जीतकर उन से बादशाही कर ठहरा लिया और हसपानियह देश जो यूरप के बीच स्पेन देश में है उस में जो रोददइब्र नदी है उस से लेकर गंगा तक के देश लड़ाई में जीत लिये इस बात से साफ़ जान पड़ता है कि उस समय में ख़लीफ़े बड़े समर्थ थे तिस पीछे वलीद के सर्दारों में से एक मनुष्य ने भरतखण्ड के ऊपर चढ़ाई की परंतु चीतोड़ के राजा बप्पा ने साम्ना करके उसको लड़ाई में हटा दिया और उसका बल न चला कि पहले जो देश अधिकार में थे उनको लेले फिर तीसरी बेर हारून रशीद का बेटा मामून चढ़ा वह भी राजपुताने के सर्दारों से हार गया॥

हारून रशीद के मरे पीछे ख़लीफ़ों का राज्य घटने लगा और सब सूबे और हाकिम फिर गये फिर हर एक सर्दार स्वतंत्र हो गया केवल बग़दाद और उसके पास के शेष देश अधिकार में रह गये ॥

नव्वाब और हाकिम जो आप ही बादशाह बन बैठे उनका वर्णन ॥

जब ख़लीफ़ों का राज्य बिगड़ा तो बहुधा सर्दार लोग स्वतंत्र होकर बादशाह बन बैठे और जो देश उनको सौंपे गये थे उनको अपना विरसा समझ कर हुक्म चलाने लगे जैसे उन में से एक मनुष्य इस्माईल समानी नामी था जिसने सन् ८६३ ई० में खुरासान हरात काबुल आदि को अपने आधीन कर बुख़ारा अपनी राजधानी बनाया और शाह अपना उपनाम रक्खा उसके घराने में नव्वे बरस तक राज्य रहा और उस घराने की पदवी सामानी हुई उसकी चौथी पीढ़ी में एक बादशाह अपने बेटे मंसूर को कम उम्र छोड़कर मरगया तब सर्दारों ने अलप्तगीं जो खुरासान का हाकिम था उस से उसको गद्दी बैठाने की सलाह की तो अलप्तगीं की अनुमति न ठहरी कि यह छोटी उम्र का गद्दी पर बैठे और देश और सेना का प्रबंध उसके हाथ में रहे परंतु उत्तर आने से पहले ही मंसूर गद्दी पर बैठगया उसने तभी अलप्-

तगीं को वहां से बुलाया परंतु वह डरकर न आया तब मंसूर की सेना उस पर चढ़ गई और बड़ी लड़ाई हुई दो बेर मंसूर की सेना के पैर उखड़गये और सब सेना मैदान से भागी तिस पीछे अलप्तगीं ने बादशाह का साम्ना करना उचित न समझकर सन ९६२ ईसवी में ग़ज़नी में जाकर अपना अधिकार कर लिया और उसे अपने नये राज्य की राजधानी बनाया ॥

सुबुक्तगीं का

वर्णन ॥

अलप्तगीं का एक तुर्की दास सुबुक्तगीं था वह हर चढ़ाई में कुमक देता और हर समय में उसका सहायक रहता और टहल में तत्पर और उसके उपकार और निर्बाह में लगा रहता था जब अलप्तगीं मरगया तब वह उसके बेटे का सहायक तन और मन से रहा परंतु यह लड़का इन्द्रियों के भोग में पड़कर जवानी ही में मरगया और उसके पीछे ऐसा कोई न रहा जो अधि- कारी गद्दी का हो निदान सुबुक्तगीं अलप्तगीं की बेटी से ब्याह करके आप ही गद्दी पर बैठा और कुछ दिन राज्य करके सन ९९७ ईसवी में मरगया उसके पीछे उसके छोटे बेटे ने राज्य का दावा किया और बड़े २ झगड़े मचाये परंतु महमूद जो यथार्थ में गद्दी का अधि- कारी था उस से उसका कुछ बस न चला अंत को महमूद ने उसे पकड़ लिया ॥

बादशाह महमूद का

वर्णन ॥

सुबुकतगीं के मरजाने पीछे महमूद बादशाह हुआ यह बादशाह बड़ा साहसी और बीर था और सिपाह गरी की विद्या में बहुत प्रवीण था और लड़ाई में बड़ा हस्तलाघव और चतुराई दिखलाता था और वह समानियों के सब राज्य का अधिकारी हुआ और जो देश रोददजलह और जगजारटिस नदी के बीच में हैं वे भी सब अपने अधिकार में करलिये और सन १००१ ईसवी में वह भरतखण्ड पर चढ़ा तो पहले पहल उसने लाहौर के राजा को जाजीता फिर उज्जैन और गवालियर और कालिंजर और क़न्नौज और दिल्ली अजमेर के जो राजा अपनी २ सेना इकट्ठा करके उस से लड़ने आये थे वे सब डरकर साम्ना न कर सके बरन कई राजा उसके आधीन होगये और महमूद का विभव और राज्य प्रताप और विजयों से दिनों दिन बढ़ता गया तो यहां तक नौबत पहुंची कि उसने अपने मौरूसी देश के सिवाय गंगा से गुजरात और कश्मीर तक अमल करलिया और उसका बहुत यही मनोरथ था कि जो लोग अपने मत के विरोधी हैं उनके माल को लूट करके माल इकट्ठा करना और महम्मद के मत को सारी दुनिया में फैलाना और कुछ उतना अभीष्ट राज्य के बढ़ाने का न था यह बादशाह महम्मद के धर्मशास्त्र के ऊपर बहुत चलता था और

कोई दुनिया का मतलब चाहे वह कैसा ही बड़ा हो उसके लिये मुसलमानी मत के प्रचार करने में कोताही नहीं करता था और गुजरात में उसने सोमनाथ के मंदिर में अधिकार करलिया और मंदिर की बड़ी मूर्त्ति के पास जाकरके अपने फर्से से मूर्त्ति की नाक तोड़ डाली तब सब ब्राह्मणों ने इकट्ठा होकर कहा कि जो इस मूर्त्ति को न तोड़ो तो हम सब मिलकर इसके बराबर तोलके निखालिस सोना आपको भेंट करेंगे यह सुनकर सब मंत्रियों ने सलाह दी कि सोना लेलीजिये परंतु उसने न माना और मूर्त्ति तोड़ ही डाली कहते हैं कि उसके भाग्य से मूर्त्ति के बीच इतना रत्न निकला कि सोने के मोल से अधिक पड़ गया ॥

बादशाह मसऊद का

वर्णन ॥

सन् १०३० ईसवी में महमूद मरगया और उसका बेटा मसऊद गद्दी पर बैठा उसने भी हिन्दुस्तान पर बारंबार चढ़ाइयां कीं परंतु सलजौक़ जाति के जो तातारी लोग फिरगये और बहुत अन्याय करने लगे उनके लिये उसे वहां जाना पड़ा जहां उसके बाप ने उन लोगों को जीहून के पार आने की राह देकर खुरासान के जो मैदान बेवारिस पड़े हुए थे उन में घोड़ों के चराने को कहदिया था उसे लड़ाई में तातारियों ने जीत लिया

और जो देश जीहून और फ़रात के बीच में हैं वे छीन लिये तब वह लाचार होकर भरतखण्ड को उलट आया और यहां सन् १०४० ईसवी में अपनी सेना के हाथ से मारा गया जिस समय में सब देशों में अप्रबंध और बिगाड़ हुआ उस समय सलजौक़ तातारियों ने ग़ज़नी पर अपना दख़ल कर लिया और उनका यह विचार ठहरा कि धीरे २ सब राज्य अपने अधिकार में कर लेवें ॥

फ़र्रुख़ज़ाद ने लड़ाई के पीछे बंधुओं को छोड़ दिया और इनआम देकर निहाल किया और उनको सलजौक़ों के पास भेज दिया तो इस बादशाह ने उसकी भलाई और उदारता से प्रसन्न होकर अपने बंधुओं को भी छोड़ दिया इस कारण दोनों जातों में आपस में अत्यंत प्रीति हो गई ॥

बादशाह बहराम का

वर्णन ॥

कितने एक राज्यों के बीत जाने के पीछे बहराम बादशाह हुआ जिसने अपनी बेटी कुतुबुल्दीन के साथ ब्याह दी उसके मरे पीछे कुतुबुल्दीन ने उस राज्य के लेने का दावा किया और उसी झगड़े में मारा गया ॥

बादशाह शहाबुल्दीन का वर्णन ॥

कुतुबुल्दीन का भाई शहाबुल्दीन महम्मद ग़ोरी सन् ११८६ ईसवी में ग़ज़नी के घराने को तहसनहस करके गद्दी पर बैठा था उसने कुतुबुल्दीन के मारनेवालों से पलटा लिया और सब का नाश कर दिया और भरतखण्ड के ऊपर चढ़ाई की और बुलंदशहर के गढ़ को जीत लिया और एक अधिकारी से बचन लेकर वहां का अधिकार अपनी ओर से उसे सौंप दिया फिर वह दिल्ली और अजमेर को गया परंतु वहां के राजाओं से हार गया तब उसने अपने कितने एक सर्द्दार जो लड़ने में कच्चे थे और जिनके डर जाने से पराजय हुई थी उनको बड़ी ताड़ना और दुःख दिया और जिस बुलंदशहर को जिन दो राजाओं ने मिलकर ले लिया था उसके छुड़ाने के लिये जाकर उन दोनों राजाओं को जीत लिया और उसके दास कुतुबुल्दीन ने दिल्ली लेली और बनारस भी लेली और वहां के सब मंदिर और मूर्त्तें तोड़ फोड़ डाली गईं निदान महम्मद ग़ोरी का राज्य सिंधु नदी से लेकर अयोध्या तक और रासदेव से गढ़वाल और नैपाल तक होगया उसके पीछे उसने सलजौक़ के राज्य में चढ़ाई की वहां से हारकर अंत को सन १२०६ ई० में गकरों के हाथ से मारा गया ॥

ना. दैवशर्म

बादशाह कुतुबुल्दीन का वर्णन ॥

महम्मद ग़ोरी के मरजाने के पीछे कुतुबुल्दीन ने चार बरस तक अच्छी तरह से भरतखण्ड में राज्य किया और एक दिन घोड़े से अचानक गिरकर मरगया तब अलतमश जो पहले कुतुबुल्दीन का दास था और पीछे उसका जमाई हुआ वह गद्दी पर बैठा उसके मरे पीछे गद्दी के लिये बहुत से झगड़े उठे. जैसे अलतमश की बेटी रज़ीयह अपने भाई को गद्दी से उतार कर आप गद्दी पर बैठी और उसी समय में मारी गई फिर उस के पीछे दूसरा बहराम और मसऊद एक दूसरे के पीछे गद्दी पर बैठा और इसी तरह मारे गये अंत में राज्य परायों के हाथ में जाता रहा जैसे बहराम के राज्य के समय में मुग़ल भरतखण्ड में आये और चंगेज़ख़ां अपनी बुद्धिमानी और शूरता से चीन की दीवार से नदी बालका तक जो चरवाहों के समूह बसते हैं उनका सर्दार सन् १२१० ईसवी में हुआ और उसने चीन के देश पर सेना लेकर पेकिन नगर को अपने अधिकार में कर लिया फिर उसने उत्तर के देश जीत लिये और ख़ारज़म के शाह को भी जीता कहते हैं कि ख़ारज़म के रहनेवाले मनुष्य एक लाख साठ हज़ार के लग भग मारे गये उसके पीछे जीहून नदी के इस पार के देश और खुरासान जीत ली इसके अनंतर वह यूरप के देशों की ओर फिरा परंतु जरमनी के देश

तक पहुंचके सन् १२२० ईसवी में मर गया तदनंतर जो बादशाह गद्दी पर बैठे उन्हों ने विचारा कि हम पूरब की सिपाह से न जीत सकेंगे और हमारी शूरता उनके आगे कुछ न चल सकेगी इसके सिवाय रूस और पोलैंड के पटपड़ों में कुछ लोभ भी नहीं है जिस से वे उसका लालच करते इसलिये दक्षिण की ओर जीतने को चले और जाते ही फ़ारस पर चढ़ाई करके सलजोक़ों का राज्य बिगाड़ दिया और सिंधु नदी के उत्तर के देश अपने अधिकार में कर लिये ॥

शाह महमूद का

वर्णन ॥

शाह मसऊद के पीछे उसका चचा और अलतमश का बेटा महमूद गद्दी पर बैठा यह बादशाह पहले क़ैद रहा था वहां केवल ग्रंथों के देखने से ही अपने मन को बहलाता था और बादशाही कोष से अपने निमित्त कुछ धन न लेता उसने बीस बरस तक बड़े आतंक और न्याय से राज्य किया और प्रजा को बहुत प्रसन्न रक्खा उसके समय में किसी ने किसू पर अन्याय नहीं किया और किसी ने किसू पर न झगड़ा उठाया और कितने ज़मींदार और मालगुज़ार ऐसे थे जिन्हों ने अपने बल से एक पैसा भी न दिया था उन्हें उसने अपनी सभा में बुलाया और सुघड़ बहाने से उनकी प्रसन्नताई

के साथ उनकी जागीरें छीन लीं और अपने बेटों के नाम कर दीं यह बादशाह बड़ा भाग्यवान् था जो लड़ाई हुई उस में वही जीता ॥

और गक्करों को फिर भी उसने दबा लिया और उनका राज्य अपने आधीन कर लिया इसी तरह अंतर्वेद और मालवा और लाहोर और मुलतान भी अपने अधिकार में कर ली और उसके मंत्रियों में से शेरखां जिसने ग़ज़नी को जीता उसकी सभा में सन् १२५८ में चंगेज़ख़ां के पोते हलकूशाह ने एक दूत भेजा उस समय उसने बड़ी बादशाही चाल ढाल और शोभा के साथ उस से मिलाप किया और महमानी का सब सामान उसके लिये भेजा कहते हैं कि जैसे उसका बाहर शोभा से भरा हुआ था वैसा ही उसका भीतर आदर से ख़ाली था और वह योगियों की तरह अलोना और फीका भोजन करता और न्याय करने के समय में भी केवल ग्रंथों के अवलोकन में ध्यान रखता और उसके केवल एक ही ब्याही बेगम थी वही सब घर का काम काज करती और भोजन भी बनाती एक दिन उसने नम्र होकर कहा कि अयि विभवों के स्वामी मैं भोजन बनाने में बहुत दुख पाती हूं और मेरी अंगुलियों की यह दशा है कि उन में फफोले पड़गये हैं इस से जो एक दासी रोटी करने के लिये कर दीजिये तो बड़ी दया हो बादशाह सुनते ही क्रुद्ध होकर बोला कि यह सृष्टि ईश्वर की अमानत है कुछ सुख चैन के लिये नहीं है

जो इस में कोई बात अनुचित करूं तो ईश्वर के आगे क्या उत्तर दूंगा तुम को योग्य है कि वैसे ही अपने काम काज में लगी रहो इसलिये कि अंत के दिन उसका वेतन पाओ वह बिचारी यह बात सुनकर चुप हो रही और उसी तरह सब काम करने लगी एक दिन की बात है कि कोई सर्दार उस बादशाह के मिलाप को आया और उसके हाथ के लिखे हुए क़ुरान को देखने लगा उस में एक शब्द शुद्ध लिखा हुआ था उसको देखकर भ्रम से कहने लगा कि यह शब्द अशुद्ध है यह सुनकर बादशाह ने वैसे ही उस शब्द के आस पास सियाही का एक घेरा कर दिया और वह शब्द यथार्थ में शुद्ध था और जब वह सर्दार चला गया तो उस बादशाह ने उस घेरे को छील डाला उस समय नौकरों में से किसी अमीर ने ढिठाई से पूछा कि आपने पहले इस में घेरा खींच दिया अब उसको छील डाला इसका क्या कारण है बादशाह ने उत्तर दिया कि मैं अच्छी रीति से जान्ता था कि यह शब्द शुद्ध है परंतु उसके साम्ने जो ऐसा न करता तो उसका मन उदास हो जाता और शर्म से कुछ कह न सक्ता यह सज्जन बादशाह चिरकाल राज्य करके किसी रोग से मर गया और उसके मरने के सोच से राज्य के सब नौकर चाकर बड़े दुखी हुए और सब प्रजा उसके शोक सागर में डूब गई और हर कोई उसे भलाई और सज्जनता से चाहता था और अपने चित्त से उस से स्नेह रखता था ॥

बादशाह बलबन का

वर्णन ॥

महमूद के पीछे उसका बहनोई बलबन जो पहले दास था वह गद्दी पर बैठा उसने शेरखां और जिन अमीरों को पहले किसी बात में मिलाया था उनके मार डालने से अपने नाम को बट्टा लगाया उसके समय में तुग़रलखां बंगाले का सूबह फिर गया तब उसने बहुतसी सेना दबाने के लिये भेजी पर तुग़रलखां ने उस बादशाह की सेना को हटा दिया फिर उस पर बादशाह आप ही चढ़ गया और उड़ीसा तक उसका पीछा किया एक दिन मलिक मुहय्युद्दीन जो बादशाह के अमीरों में से था वह चालीस सवार लेकर एक टीले पर चढ़कर एर ओर को देखने लगा तो देखता क्या है कि एक बड़े मैदान में बैरी की सेना पड़ी हुई है और सब लोग जहां तहां पड़े हैं और सामान लड़ाई का रक्खा है और कोई सोता है और कोई जागता है वह उनको असावधान समझकर अपने साथियों समेत तुग़रल के डेरे की ओर दौड़कर डेरे के पास जा पहुंचा और बैरी की सेना ने अपनी सेना के लोग समझकर उस में से कोई उसका रोकनेवाला न हुआ वह बेधड़क शत्रु के डेरे में तलवार हाथ में पकड़े हुए मुंह से यह कहता हुआ कि बलबन की विजय हो घुस पड़ा और उसके कितने ही मनुष्य जो वहां थे उनको मारा तो तुग़रल ने समझा कि बादशाह

की सब सिपाह मुझ पर आगिरी इसी वहम से घबराकर भाग निकला तो रस्ते के बीच में एक नदी पड़ती थी उसको उसने चाहा कि तैरकर निकल जाऊं परंतु मलिक मुहय्युद्दीन ने पीछा करके नदी के बीच ही में उसके एक ऐसा नावक का तीर मारा कि उसी जगह उसका जी निकल गया तिस पर भी मुहय्युद्दीन को संतोष न हुआ नदी में घोड़ा डालकर उसका सिर काट लिया और बलबन के पास लाया तो बादशाह को उसकी जल्दी पर अफ़सोस हुआ और उदास होकर उसको और उसके साथियों को जैसा चाहिये झिड़का परंतु अंत को आदर और सत्कार से उसकी प्रतिष्ठा बढ़ाई और हर एक को प्रतिष्ठा के अनुसार इनआम दिया ॥

जब बलबन ने शेरख़ां को जिसका प्रसंग पहले हो चुका है उसको मरवा डाला और मुग़ल लोग जो उस की बीरता से डरते थे वे ख़ाली स्थान पाकर लाहौर में चढ़ आये परंतु महम्मदशाह ने उन्हें जीत कर हटा दिया और उनके पीछा करने में मारा गया ॥

जब बलबन सन् १२८६ ईसवी में मरा तो राज्य के लोगों ने महमूदशाह के बेटे कैख़ुसरव का हक़ मिटा करके चाहा कि बलबन के छोटे बेटे क़ुराख़ां को गद्दी पर बैठालें पर उसने न माना और गद्दी पर न बैठा निदान क़ुराख़ां का बेटा कैक़बाद गद्दी पर बैठा और उसने अपने खोटे साथियों के कहने से कैख़ुसरव और बहुतसे अमीरों को मरवाया इस अन्याय करने से सब प्रजा

उदास हुई और हर एक ने बुराई करने पर कमर बांधी बहुतेरे खोटे कैक़बाद के मुसाहब चाहते थे कि उस में और उसके बाप क़ुराख़ां में मेल न होने पावे और सदा दोनों के मनों में वैमनस्य रहे परंतु क़ुराख़ां बहुत गंभीर और बुद्धिमान् था इस से वह बेटे की नटखटियों और बुरी चालों पर ध्यान न लाया और उसके मिलने को गया वहां उसने मनोरंजन सत उपदेशों से उसके बिकृत मन को निर्विकार किया और जो कुछ उसको उचित वृतांत कहना था कहा और रोने लगा तो कैक़बाद बाप को रोते देखकर उसका आदर सत्कार और आधीनी करने लगा यहां तक कि पैरों पर गिर पड़ा और कहने लगा कि मेरे अपराध को क्षमा कीजिये इसी प्रकार देर तक आपस में रोना झीकना रहा और दोनों के चित्त से वैमनस्य जाती रही और जितने उपाधी मनुष्य थे वे सब निकाले गये परंतु निदान कैक़बाद अपने अज्ञान और चंचल स्वभाव से राज्य का प्रबंध न कर सका इस कारण से अमीरों ने झगड़े उठाये और तरह २ के बिगाड़ मचाये जिस में राज्य बिगड़ गया और वह आप सन् १२८८ ईसवी में जलालुद्दीन फ़ीरोज़ जो ग़िलज़ई जाति में से था उसके हाथ से मारा गया ॥

जलालुद्दीन का
वर्णन ॥

जलालुद्दीन सत्तर बरस की अवस्था में गद्दी पर बैठा यह बादशाह बड़ी स्थिर प्रकृति और गंभीर स्वभाव था और उसके साथी संगती सब बुद्धिमान् और चतुर थे और साधुओं से संगति रखता था और उनका बड़ा आदर सत्कार करता था अपने नौकरों में से किसी को उसने उदास कभी न किया और प्रजा पर सदा हित और प्यार की दृष्टि रखता था उसके गुण और चरित्र बड़े मनोरंजक हैं और एक दिन की बात है कि कई मनुष्य उपाधी जो मारने और ताड़ना के योग्य थे वे उसकी कचहरी में बुलाये गये तो उनके अपराध को उसने क्षमा करके कहा कि बुराई के पलटे बुराई करना मुलक बराबर है परंतु बुराई के पलटे भलाई करना बड़प्पन है जब जलालुद्दीन छोटे बड़े पर अत्यन्त प्यार करने लगा और उसकी दया ऐसी बढ़गई कि उस से राज्य के प्रवंध में बिगाड़ पड़ा यहां तक कि उसका सगा भतीजा अलाउद्दीन उसके मारने पर उतारू हुआ और हर तरह के उपाय करने लगा होते होते यह चर्चा विश्वासवाले मुखबरों ने बादशाह तक पहुंचाई और उसको उपाधि से सुचेत करदिया और जिन्हों ने अलाउद्दीन को लड़कपन से पाला था उन्हों ने भी यह बात जतला दी तो भी उसने सच न माना और बादशाह ने अलाउद्दीन से कुछ बचाव

न किया और न अपने मन में उसकी ओर से किसी तरह का संदेह लाया निदान सन् १२६४ ईसवी में एक दिन अवकाश पाकर अलाउद्दीन ने अपने चचा को मार डाला और आप गद्दी पर बैठा ॥

अलाउद्दीन का

वर्णन ॥

अलाउद्दीन ने बीस बरस से अधिक राज्य किया और यह बादशाह बड़ा अन्याई और उपाधी था और उसके दुराचार और कुटिलता के कारण बहुत से अमीर उस से फिरकर उसके शासन से बाहर होने लगे तब उसने अपनी शूरता और बुद्धिमानी से सब को दबा लिया और सब शत्रुओं को जीता और तीन बेर मुग़लों को पराजय कर लिया और गुजरात को जीत करके अपने राज्य का सूबह बनाया और दक्खन को नाश कर दिया और चीतोड़ को निर्दय होकर लूटा तो बहुधा बड़े २ राजपूत राजों के समूह इसको कर देने लगे और इस बादशाह में बहुतसी चमत्कारी और स्वाभाविक गुण थे और यद्यपि प्रारंभ में लिखना पढ़ना नहीं जानता था परंतु इसने जवानी में गुण और विद्याओं के सीखने का विचार किया और बहुत जी लगाके थोड़े समय में फ़ारसी विद्या को ऐसा पढ़गया कि अच्छे ग्रंथ जिनके गद्य पद्य बड़े गूढ़ाशय और कठिन थे उनको पढ़ने

8|839

लगा श्रीर उनके अर्थ करने लगा श्रीर पण्डितों की संगति के प्रभाव से फ़क़ीर श्रीर साधुओं के साथ संग करने का बिचार हुआ श्रीर उन लोगों का आदर सत्कार जैसा कि उचित है करता था एक दिन अलाउल्दीन शिकार को गया था जंगल में ही संध्या हो गई लाचारी से उलट न सका वहीं रात को बसा श्रीर सवेरा होते ही एक पहाड़ी पर चढ़कर देखने लगा कि बस्ती से कितनी दूर पर हूं अचानक उसका भतीजा सलेमान किसी ढब से उसी स्थान में उतरा था वह उसे देख कर मारने के लिये पीछे पड़ा श्रीर कितने एक मुग़लों को साथ लेकर उसने फरसों से अलाउल्दीन को घायल किया श्रीर अपने जी में वह उसे मुर्दह समझकर वहीं छोड़ कर चला आया श्रीर गद्दी पर बैठ गया तो सिपाह श्रीर राज्य के अधिकारी इस भयानक चर्चा को सुन करके पस्तावा कर हाथ मलते रहगये श्रीर कोई इसका बाधक न हुआ कुछ दिनों में अलाउल्दीन ने घावों से चंगा होकर पांच सौ सवार इकट्ठे किये श्रीर दिल्ली में आया तो उसकी सब सिपाह उस से जामिली श्रीर सब अमीरों ने आन कर उसे भेटें दीं श्रीर मंत्री उसके आधीन हुए निदान उसने सलेमान को क़ैद कर लिया श्रीर उसके सब संग साथियों को मरवा डाला श्रीर सन् १३१६ ईसवी में सलेमान के किसी दास ने अला-उल्दीन को मार डाला श्रीर उसका बेटा बड़ा अज्ञान हुआ जिसका नाम मुबारक था वह भी अपने किसी

नौकर के हाथ से मारा गया और अलाउद्दीन के घराने में से कोई बाक़ी न बचा ॥

गयासुद्दीन तग़लक़ का

वर्णन ॥

सन् १३२१ ईसवी में ग़यासुद्दीन तग़लक़ गद्दी पर बैठा और यह बादशाह बड़ा न्याय करनेवाला और दयालु प्रकृति और गंभीर स्वभाव था उसने राज्य के सब काम जो पहले बिगड़ गये थे उनका अच्छी तरह से प्रबंध किया और उस से सब छोटे बड़े प्रसन्न रहते और उसने पुराने स्थानों और गढ़ों की मरम्मत करवाई और कई नये गढ़ भी नये सिरे से बनवाये और उसके राज्य में हर एक देश के ब्योपारियों के आने जाने से ब्योपार बढ़ा और बहुत से क़ानून कचहरी दीवानी के बनाये गये और पण्डित और चतुर लोग उसके आदर सत्कार और प्रतिष्ठा करने से बड़े सुखी हुए इस प्रकार कितने एक समय तक राज्य करके संयोग से एक मकान की छत्त के तले दबकर मरगया ॥

अलफ़खां जिसका प्रसिद्ध नाम महम्मद है उसका वर्णन ॥

ग़यासुल्दीन के मरजाने के पीछे उसका बेटा अलफ़खां अर्थात् महम्मद गद्दी पर बैठा यह बादशाह बड़ा दानी था और पण्डित और गुणवानोंसे बड़ी प्रीति रखता था नियम और संयम में एक ही था और ज्ञानी और बुद्धिमान् भी एक ही था और धर्म्म संबंधी कामों को तन मन से करता और ईश्वर की टहल में रात दिन लगा रहता पर राज्य के प्रबंध करने में अन्यायी था और वीरता में उसे दूसरा रुस्तम कहना चाहिये और लड़ाई के ढब भी ख़ूब जानता था और बहुधा सूबे जो उसके प्रबंध और अन्याय करने से फिर गये थे वे सब आधीन हो गये परंतु अप्रबंध से राज्य उसका चैतन्य न हुआ और जब तक यह राज्य दूसरे घराने में न गया तब तक उस राज्य के देशों में सुख चैन न हुआ और यह बादशाह बड़ा लालची भी था जिस समय वह नर्मदा और कृष्णा नदियों के बीच का देश जीतकर ले चुका उस समय लाख सवार नैपाल की अलंग चीन देश के जीतने को लिये भेजे और उतने ही ईश्वर के दिये हुए देशों पर संतोष न किया निदान उसका यह फल हुआ कि उन में से एक मनुष्य भी फिर कर नहीं आया जो उस चढ़ाई के समाचार में से कुछ ख़बर देता और वहां की व्यवस्था कहता ॥

जोहून और खुरासान के परे जो देश हैं उनको भी मन से चाहता था कि जीतलूं परंतु यह भी अभिलाषा उसकी पूरी न हुई और जब इन चढ़ाइयों में बड़ा खर्च पड़ा तब देशों में अधिक कर लगाने के ऊपर कमर बांधी इस कारण से सब प्रजा दुखी हुई और सब राजा और सूबे फिर गये ठौर २ आपस में झगड़ा उठा इसी समय में उसने हुक्म दिया कि दिल्ली के रहने वाले दौलताबाद में जाकर बसें और अपना २ सामान वहां उठा लेजावें उस समय लोग जी से दुखी हो हो रहे थे सुनते ही इस चर्चा के घबरा गये परंतु लाचार होकर उसका हुक्म पूरा करना पड़ा और दिल्ली को उजाड़कर वहां जा बसे हज़ारों मनुष्य उसके समय में अकाल और मरी से मर गये यह बादशाह देश के अंधेर और सूबों की वैमनस्य से बहुत तरह की कठिनाइयों से घिरा हुआ था उस पर भी अपने साहस को न छोड़ा और मुलतान और तैलंग के अधिकारी और बंगाले का हाकिम और अवध का सूबह ये सब फिरे हुए थे उन सब को उसने वश में कर लिया और पंजाब में गकरों ने लूट मार की थी उनको भी जीत लिया और ठौर २ धावे मारता रहा और बहुधा सब सूबे जीत लिये परंतु अभी तक देश में ठीक प्रबंध न करने पाया था कि वह किसी रोग से सन् १३५१ ईसवी में सत्ताईस बरस राज्य करके मरगया ॥

फ़ीरोज़शाह का वृत्तांत ॥

महम्मदशाह के मरे पीछे फ़ीरोज़शाह गद्दी पर बैठा और यह बादशाह यद्यपि बुद्धिमान् और न्याय करने वाला था परंतु इतनी शक्ति न थी कि महम्मदशाह के समय में जो बिगाड़ और अबतरी हो गई थी उसका प्रबंध करता और राज्य को दृढ़ करके संभालता वा जो देश अपने अधिकार से जाते रहे थे और जिनके अधिकारी आपही बादशाह बन बैठे थे उनको अपने वश में करता जैसे दक्षिण देश में एक मुसलमान आपही बादशाह बन बैठा और कई सौ बरस तक उसके घराने में लगातार राज्य चला आया और बंगाला देश भी फ़ीरोज़शाह के हाथ से निकल गया परंतु जो सूबे उसके राज्य में थे उनका उसने अवश्य अच्छी तरह पर प्रबंध किया और देश को नये सिरे से सुहिल कर दिया और कितने महसूल जो अयोग्य थे वे छोड़ दिये और कर भी थोड़ा कर दिया इसके सिवाय उसने नहरें बनवाईं और तालाब खुदवाये जिनके होने से खेतियां बढ़ने लगीं और हज़ारों खेत बढ़गये यह बादशाह जब तक जिया तब तक नेक नाम रहा और दिल्ली के बड़े सज्जन बादशाहों में गिना गया अंत को सन् १३८८ ईसवी में बूढ़ा होकर अपनी मौत से मर गया ॥

शाह महमूद का बर्णन ॥

बादशाह फ़ीरोज़ के पीछे राज्य के मध्ये बड़ा झगड़ा पड़ा और उस झगड़े के निबड़ जाने पीछे फ़ीरोज़शाह का पड़पोता महमूद गद्दी पर बैठा इस समय से तीस बरस पहले देश फ़ारस में ऐसा बिगाड़ मच रहा था कि जिस से हर एक सूबह फिर गया और जब से अब तक समरक़ंद का राज्य जिस में मावरुलनहर और खुरासान और काबुल और क़ंधार आदि सूबे मिले थे उसके लिये बहुधा हाकिम आपस में झगड़ा करते चले आये उस समय में तातार और चीन का राज्य निर्बल होगया था और दिल्ली का राज्य भी तबाही पर पहुंच गया था निदान एशिया के देशों की यही व्यवस्था थी उस अंतर में जिसका आगे बर्णन होता है वह उन देशों पर चढ़ा ॥

बादशाह तैमूर का
बर्णन ॥

तैमूर जिसको तिमिरलिंग भी कहते हैं वह समरक़ंद के एक अमीर का बेटा था परंतु अपनी बुद्धि और साहस से बहुत बड़े राज्य का अधिकारी होगया और उसकी युवा अवस्था लड़ाइयों में बीत गई और शूरता और बुद्धि इतनी रखता था कि चौंतीस बरस की अवस्था में अपने हितू मनुष्यों की सहायता से अपने सब देशों का बादशाह हुआ और उतने राज्य में संतोष

न करके फ़ारस और बकर देश बरन आधे से अधिक तातार को भी जीत लिया और समरक़ंद की ओर फिरने के पीछे सन् १३६७ ईसवी में भरतखण्ड की ओर चला और पहाड़ों के बीच जो हिन्दुस्तान और उत्तर के देशों के बीच अंतर है उस से हज़ारों कठिनाइयों को भुगतके काबुल में पहुंचा और वहां से अटक नदी की राह होकर हिन्दुस्तान में आया और देश में लूटना फूकना यहां तक मचा दिया कि पश्चिम के सूबों को लूट मार करके उजाड़ कर दिया इसी प्रकार लूटता मारता सन् १३६८ ईसवी में दिल्ली तक पहुंचा तो बादशाह महमूद ने अपनी टूटी फूटी सेना से उसका साम्ना किया और दूसरी बेर पराजय हुआ निदान जीत से निरास होकर क़िलअ़ ख़ाली कर दिया और उसने अपने लड़के बाले और राज के अधिकारियों समेत एक ओर की राह ली फिर कोई शहर में रोकनेवाला न रहा तैमूर ने शहर को मन माना लूटा तो लोग इधर उधर जहां जिसको सुबीता जान पड़ा निकल गया और शहर का हरएक कूचह लोथों से भरगया आधे शहर को मुग़लों ने फूक दिया इस पीछे तैमूर गद्दी पर बैठा और अपने को हिन्दुस्तान का बादशाह प्रसिद्ध किया केवल पंद्रह दिन दिल्ली में रहकर बहुधा अमीर अधिकार वाले जो उसके आधीन होगये थे उनको ख़िलअ़तें दीं और उनके सूबे उन्हीं को अपनी ओर से सौंप दिये और आप उत्तर को ओर चला इस तरह पर कि गंगा

की दोनों ओर के देश आदि से अंत तक लूट लिये और बहुतसा धन लूटा और जिन बंधुओं में बहुत हिन्दुस्तानी सर्दार थे उनको लेकर समरक़ंद को गया जब तैमूर भरतखण्ड से चला गया तब राज्य के अधिकारियों में बड़ा झगड़ा खड़ा हुआ इस बिगाड़ के होने से महमूद ने फिर आकर दिल्ली में दख़ल कर लिया और एक अवधि में थोरा २ शहर फिर दुख़िल हुआ परंतु बादशाह महमूद के आधीन सब अमीर और मंत्री न हुए उनके फिर जाने से राज्य दो बेर बरबाद हुआ इसके पीछे बादशाह महमूद बीस बरस तक नाम के लिये बादशाह रहा और मरगया ॥

बादशाह ख़िज़रख़ां का

वर्णन ॥

बादशाह महमूद के मरे पीछे ख़िज़रख़ां सय्यद जो मुलतान का अधिकारी था उसने तैमूर के बेटे शाहरुख़ के समय में भरतखण्ड का अधिकार पाया और दूरंदेशी कर बादशाह शाहरुख़ के डर से और सब राज्य के अधिकारियों की प्रसन्नता से अपने को तैमूर के सर्दारों में से प्रसिद्ध किया इसी लिये अपना सिक्कह भी नहीं चलाया शाहरुख़ के नाम का वैसा ही सिक्कह रहने दिया ख़िज़रख़ां सन् १४२१ ईसवी में मरगया उसके मरने से प्रजा को बड़ा दुःख हुआ क्योंकि उसकी भलाइयों

से उसको जी की बराबर सब मानते थे उसके पीछे उसका बेटा मुबारक गद्दी पर बैठा यह बादशाह लड़ाई और राज्य के प्रबंध में बड़ा चौकस था और उसको लड़ाई के ढब खूब आते थे इसी कारण से बहुत से फिरे हुए सूबों पर बलवान् रहा और बहुधा राजा जो झगड़ा करने में थे उनको वश में लाया और उसके न्याय से प्रजा ने सुख पाया और उसकी सरल प्रकृति और उत्तम गुणों से मन से प्रीति करने लगी परंतु सन् १४३५ ईसवी में निमकहराम मंत्री के हाथ से मारा गया इस खून का पलटा उसके बेटे महम्मदखां ने लिया अर्थात् जब उस झगड़ालू ने नये सिरे से झगड़ा उठाया तब बादशाह के पुत्र ने उसे और उसके संगी जनों को मार डाला और महम्मदखां के राज्य में एक मनुष्य लोदियों की जाति में से सरहिन्द का रहनेवाला जिसका नाम बहलूल था वह लाहौर में आपही बादशाह बन बैठा और सन् १४५० ईसवी में दिल्ली पर चढ़ा उसने महम्मदखां के बेटे अलाउद्दीन को गद्दी से उतारकर बदाऊं में रहने की आज्ञा दी जिसे अलाउद्दीन ने बसाया था वहीं अलाउद्दीन जीते जी रहा और बहलूली अफ़ग़ानों के घराने में बड़ा साहसी और सामर्थवान् था उसने शूरता और वीरता से जौनपुर का राज्य लेकर अपने राज्य में मिला लिया बरन सिन्ध के सब देश से लेकर बंगाले तक के देश अपने अधिकार में कर लिये वह बादशाह अड़तीस बरस तक राज्य करके सन् १४८८ ईसवी में मरगया ॥

बहलूलीशाह के बेटे सिकन्दरशाह का वर्णन ॥

बहलूलीशाह के मरे पीछे उसका बेटा सिकन्दर गद्दी पर बैठा वह कितने एक समय चौकसाई और बुद्धिमानी से राज्य करके मरगया उसके कई बेटे थे उन में से बड़ा बेटा इब्राहीम गद्दी पर बैठा उसी समय में जलालखां मझले भाई ने चाहा कि जौनपुर को अपनी राजधानी बनाकर अपने लिये न्यारा राज्य कर लूं परंतु इब्राहीम ने उसको जीतकर क़ैद किया अंत को मार भी डाला और तीसरा भाई अलाउद्दीन जी की रक्षा मुख्य समझकर काबुल को चला गया तब राज के अधिकारी बादशाह की अनीति और कुचाल से फिरगये यहां तक कि मुलतान के सूबह दौलतखां ने बाबरशाह जो काबुल का अधिकारी था उसको लिखा कि भरतखण्ड में आकर अपना अधिकार करलो और अन्यायी के हाथ से छुड़ाकर इस देश को सुखी करो उसको पढ़कर बाबरशाह पंजाब को लूटता मारता हुआ दिल्ली में पहुंचा पानीपत के लगभग शाह इब्राहीम ने जाकर आपही साम्ना किया परंतु जीता नहीं उसी लड़ाई में मारा गया और सन् १५२५ ईसवी में भरतखण्ड का राज्य मुग़लों के घराने में आया ॥

दक्षिण के बादशाहों का

वर्णन ॥

मुग़ल बादशाहों की वर्णन के पहले कुछ दक्खिन के मुसलमान बादशाहों का वर्णन करते हैं ॥

जानना चाहिये कि बादशाह महम्मद तग़लक़ के समय में भरतखण्ड के राज्य में बिगाड़ उठा और दिनों दिन वह राज्य विनाश होने लगा और देश की हर एक सूबह आपही बादशाह बन बैठा और जिस बरस में अलाउद्दीन ने पहले पहल मुसलमानी सेना का झंडा दक्षिण के देश में खड़ा किया था उसके ठीक तरेपन बरस पीछे वह देश भी उस समय में फिरगया तब तग़लक़शाह फिरे हुए सर्दारों के पराजय करने को चढ़ गया और उनको जीतकर दंड दिया परंतु दौलताबाद की लड़ाई से छुटकारा न हुआ था कि दिल्ली में उपाधि खड़ी होने की चर्चा पहुंची उसको सुनते ही तग़लक़ शाह ने उस चढ़ाई के प्रबंध करने के लिये कितने एक सर्दारों को अपनी सेना समेत वहां छोड़ा और आप दिल्ली की ओर पधारा परंतु वहां सेना के सर्दारों से प्रबंध न बन पड़ा और यहां जो सूबे फिरगये थे वे सब वश में होगये ॥

उस चढ़ाई में एक मनुष्य जो पहले एक ज्योतिषी ब्राह्मण का चाकर था और उसका हुसन नाम था वह धीरे २ अपने बुद्धिबल और सामर्थ से अधिकारी हो

गया और उसकी बड़ी प्रतिष्ठा और बिभव हुआ यहां तक कि जब दक्षिण के सब देशों को जीतकर सन् १३४७ ईसवी में दौलताबाद के बीच दख़ल हुआ तो वहां दक्खिन के राज्य का चत्र उसके सिर पर रक्खा गया और जिस ब्राह्मण ने उसके प्रताप और भाग्य के बढ़ने का वृत्तांत आगे से बता दिया था उसके कहने से उसने ब्राह्मणी पदवी स्वीकार की और कलबर्गे को अपनी राजधानी बनाई और तैलंग देश के सूबों को भी अपने वश में कर लिया और बहुधा लड़ाइयों में जीत पाई इसके अनंतर सन् १३५८ ईसवी में उसका बेटा महम्मद गद्दी पर बैठा यह बादशाह बड़ा निर्दई और कठोर चित्त था इसने विजयनगर और तैलंगाने के राजाओं से बड़ी २ लड़ाइयां कीं हज़ारों आदमी मारे गये और एक लड़ाई में तैलंगाने के राजा के बेटे को पकड़कर उसकी जीभ कटवा डाली और जलती आग में फिकवा दिया सिवाय इसके पांच लाख हिंदू मरवा डाले निदान उस राजा ने दबकर सलाह कर ली और आपस में वचन होकर ठहर गया कि हमारे तुम्हारे बंदीख़ाने में जो लोग आया करें उनको न तुम जी से मारो न हम ॥

मजाहिदशाह का

बर्णन ॥

महम्मद के मरे पीछे उसका बेटा मजाहिदशाह सन् १३७५ ई० में गद्दी पर बैठा उसने विजय नगर के राजा को जीतलिया उसको उसके चचा के बेटे ने मारा और उसी तरह वह आप भी दूसरे के हाथ से मारा गया ॥

महमूदशाह का

बर्णन ॥

उसके पीछे महमूद सन् १३७८ ईसवी में गद्दी पर बैठा जैसे मजाहिदशाह युद्ध करने में एक ही था वैसे वह संधि करने में एक ही हुआ उसके दिनों की सब से प्रसिद्ध बात यह है कि उसने हाफ़िज़ शीराज़ को दर्बार के कामों के लिये बुलाया और हाफ़िज़ आने के बिचार से नाव पर चढ़कर चला और अचानक नाव वायु के वेग से पानी के भंवर में पड़गई परंतु ईश्वर की दया से तीर में लग गई हाफ़िज़ जी के डर से नाव से उतर पड़ा फिर उस में न चढ़ा और महमूद के पीछे दो बादशाह हुए उन्हों ने कुछ २ काल राज्य किया ॥

फ़ीरोज़शाह का

वर्णन ॥

उनके पीछे फ़ीरोज़शाह गद्दी पर बैठा उसने विजय नगर को जीता और करनाटक देश को जलाकर वहां की प्रजा मार डाली उसी के समय में तैमूर भरत खण्ड में आया और दिल्ली जीती तब फ़ीरोज़शाह ने कुछ सौगात लेकर एक अपना दूत तैमूरशाह के पास भेजा और विनय पूर्वक संदेशा कह दिया कि पृथिवी-नाथ मुझे अपने चाकरों में से समझिये और आपही का सेवक हूं तैमूर ने उसकी बिनय से बड़ा प्रसन्न होकर उसके स्नेह में मालवा और गुजरात के सूबे उसको देदिये यह बादशाह पण्डितों और चतुरों से बड़ी प्रीति रखता था और उनको सब तरह से सहायता करता था और वह अपने राज्य के अंत दिनों में व्यर्थ विजय नगर के राजा से लड़ा और हारगया और उसकी सेना में से बहुत लोग मारे गये यहां तक कि बैरी ने उनकी खोपड़ियों का एक ढेर लगवा दिया इस परा-जय और धक्के के लगने से फ़ीरोज़शाह ने दुखी होकर सन् १४२२ ईसवी में गद्दी से हाथ खींचकर अपने भाई अहमदशाह को गद्दी पर बैठाया ॥

अहमदशाह का

वर्णन ॥

अहमदशाह ने भाई के पराजय होने की अपकीर्त्ति के मेटने के लिये हिन्दुओं पर चढ़ाई की और तैलंगाने के राजा ने विजय नगर के राजा की कुछ सहायता न की इस से वह हार गया बादशाह ने उसका पीछा किया और बंधुओं को न मारना इस वचन को न मानकर सब बंधुए जो उसके वश में आये वे मरवा डाले और देश लूट लिया और हिन्दुओं की जड़ खोदने में यहां तक पीछे पड़ा कि जब बीस हज़ार हिंदू मरवा चुकता तब उसका उत्सव मानकर तीन दिन टिक करके नांच करवाता इस तरह से जब सब देश लूट मार से उजाड़ कर चुका तब राजा की राजधानी घेर ली राजा ने लाचार होकर मिलाप किया उसके पीछे अहमदशाह तैलंगाने के राजा पर चढ़ा और बारंगोल को अपने अधिकार में लाया उसके अनन्तर गावल कुण्डे के गढ़ की नीम डाली और अहमदाबाद एक नया नगर बसाया यह नगर जीतेजी उसकी राजधानी रहा ॥

महम्मदशाह का
वर्णन ॥

बीच में तीन बादशाह हो चुके उनके पीछे महम्मद शाह नौ बरस की अवस्था में सन् १४६३ ईसवी में गद्दी पर बैठा उसके मंत्रियों में से एक मंत्री ख़्वाजहजहां ने शिक्षा देकर राज्य के प्रबंध सिखाये और राज्य के क़ानून बतलाये और यह बादशाह अपने घराने में फ़ीरोज़शाह के सिवाय और सब से अधिक प्रतापी हुआ पर अन्याई और उपाधी था जब बारह बरस का न हुआ था तभी उसने अन्याय करने में कमर बांधी इस तरह कि जिस हितकारी मंत्री ने पढ़ाया लिखाया था पहले उसी को उसने मार डाला इस विचार से कि ऐसा न हो कि राज्य के सब काम काज उसके आधीन हैं आगे कहीं मुझ से फिर बैठे और काग़न देश जो समुद्र के किनारे पर है उसे जीतने के लिये एक सेना भेजी जब दो बेर हार हुई तब अपना मंत्री महमूद गावां को उस चढ़ाई के प्रबंध के लिये भेजा उसने गावां का टापू समेत सब देश जीत लिया और उड़ीसा भी जीत लिया फिर महम्मदशाह आपही मंदरास के पास कानजी ब्रह्म का मंदिर जिस में बड़ा धन था उस पर चढ़ा और उस मंदिर का विनाश कर दिया और ब्राह्मणी घराने में इस चढ़ाई के पीछे ऐसी और कोई बड़ी चढ़ाई न हुई और राज्य यहां तक बढ़ा कि जिसका प्रमाण न रहा कांकन से मुसली पट्टन तक एक राज्य होगया और उस राज्य

की चुहिल कुछ बादशाह की बुद्धिमानी और साहस से उतनी न थी जितनी कि मंत्री की बुद्धि और उपाय से थी और यह मंत्री ऐसा बुद्धिमान् और गंभीर था कि उसे अगले बुद्धिमानों की गणना में गिनना उचित है इस से पहले इस राज्य में चार सूबे थे हर एक सूबे में हर एक नव्वाव अधिकारी था और वही आप माली और मुल्की प्रबंधों को करता था और वही अपनी ओर से क़िलओं पर क़िलअ़दार नियत करता था जब धीरे २ राज्य बढ़ा और अच्छी तरह अधिकार सब पर बैठगया तब उस बुद्धिमान् मंत्री ने देश के आठ बिभाग किये और यह बात नियत कर दी कि जो क़िलअ़दार नियत हों वे बादशाह की ओर से हों इस से हर एक नव्वाब का बल घट गया और फिर बैठने की सामर्थ किसू को न रही और सब सेना और सर्दारों का मासिक पहले से अधिक करदिया और अनाहत आज्ञा दी जो सर्दार दस्तूर से कम सिपाह रक्खे वह बचत का रुपया सर्कार के कोष में दाख़िल करे इस प्रबंध के करने से सब बड़े २ अधिकारियों के अंत:करण में बड़ा खुटका रहता और रात दिन मंत्री के सोच में रहते और चाहते थे कि कोई लांछन लगाकर उसे मार डलवावें निदान अवसर पाकर एक झूठा ख़त उसके नाम से बनाया और उस पर उसकी मुहर करके बादशाह के पास भेजदिया इस तरह से कि क़ासिद उसे लिये आता था हमने ज़ोरावरी उस से छीन लिया पृथ्वीनाथ

इस मनुष्य की निमकहरामी पर ध्यान कीजिये बाद-शाह देखते ही आग हो गया और आपे में न रहा उसी समय बुलवाकर मंत्री से पूछा कि जो मनुष्य सेवक होकर अपने स्वामी से बिश्वासघात करे और उसकी भलाई को भूलजावे उसे क्या दंड देना उचित है मंत्री ने बेधड़क होकर कह दिया कि ऐसे मनुष्य के ऊपर दया न करे तब शाह ने उसे वह ख़त दिखाया देखकर मंत्री ने कहा कि यह केवल छल है मुहर अवश्य मेरी है पर ख़त मेरा नहीं और मैं नहीं जान्ता कि किसने लिखा है शाह ने एक न मानी दास को संकेत किया कि इसे मारने को लेजाओ मंत्री ने उस समय यह कहा कि मैं संध्या समय के सूरज के समान अस्त होने को हो रहा हूं मेरा मारना तिनके के तोड़ने की बराबर है परंतु इस बात में पृथ्वीनाथ ही की अपकीर्ति और राज्य का बिगाड़ है शाह ने इस बात पर कुछ भी ध्यान न किया उठकर राजमहल में चले गये तब जल्लाद ने उसे मारा और वह ऐसा था कि मारने के कितने एक दिन पहले उसने शाह की स्तुति के बिषय में कुछ कविता की थी जब वह मर चुका तो शाह को संदेह हुआ कि उस मंत्री ने धन बहुतसा इकट्ठा कर लिया होगा उस से अब मेरा कोष भर जायगा परंतु जब उसके सब घर की तलाशी लीगई तो केवल दस हज़ार रुपया निकला और ख़ज़ानची से निश्चय हुआ कि जितना रुपया भेज का जागीरों से आता था वह सब नोकर

और शागिर्दपेशे के मासिक देने में उठाता था और जो कुछ बाक़ी बचता था उसे बादशाह के नाम से निछावर करके दे देता था और मंत्री अपने देश से जो रुपया लाया था उस से व्योपार होता था उस में जो लाभ होता उस से दो रुपये रोज़ खाने पीने में उठाता था और बाक़ी को ईश्वर की राह पर बांट देता था इस मंत्री ने सारी उम्र धरती पर सोकर काटी और मिट्टी के बर्तनों में खाया इस तरह पर मंत्री की भलाई सुनकर शाह पस्तावा कर कहने लगा कि जो कई राज्यों से ऐसा शुभचिंतक मंत्री चला आता था उसे मैं ने दुष्टों के छल में आनकर व्यर्थ मरवाया निदान कुछ दिन न बीते कि राज काज में झगड़ा उठा और शहर और देशों में ख़राबियां होने लगीं और बहुधा अधिकारी प्रतिकूल होगये जैसे जब शाह ने चढ़ाई से अपनी राजधानी को ओर लौटने की आज्ञा दी तो बहुधा अधिकारी इस तरह पर करते थे कि आप शाह के साथ कूच करते थे और अपनी २ सेनाओं को बादशाही सेना से न्यारी करके सब तरफ़ों को भेज दीं और कहने लगे कि ऐसे स्वामी की सेवा में क्या आस है जिसने नाहक़ ऐसे मंत्री को मार डाला भला हम को कब छोड़ेगा निदान सब छोटे बड़े के मन में इस अत्याचार से विश्वास हो गया कि अब यह घराना नाश होने पर आ लगा है वैसा ही हुआ कि थोड़े ही दिनों में सब सूबे फिरगये मंत्री को मरे हुए केवल एक ही बरस हुआ था कि शाह बीमार पड़ा और अचे-

तन दशा में यह उसके मुंह से बहुधा निकलता था कि मंत्री मुझे बहुत सताता है और मेरे बदन के टुकड़े २ करता है अंत को एक दिन उसी दशा में मरगया निदान उस मंत्री के मरते ही सारा राज्य दक्खिन का बिगड़ गया और जैसा उसने मरते समय कहा था वैसा ही आगे आया फिर कोई बादशाह उस देश में बिरहमनी घराने के बीच ऐसा साहसी और प्रतापी न हुआ जो थिरता से अच्छी तरह राज्य करता हां इस अत्याचार के पीछे उस घराने में दो तीन राज्य और चले फिर तो थोड़ी अवधि में वह घराना मटिया मेल होगया और अंत को बेडर के राज्य में से अहमद नगर फूट करके उस में पांच राजा हुए और हर एक ने अपनी २ राजधानी न्यारी बनाई उसका ब्योरा यह है कि एक ने बीजापुर दूसरे ने अहमद नगर तीसरे ने बरार चौथे ने गोलकुण्डा पांचवें ने बेडर इस प्रकार सब ने अपनी अपनी राजधानी बनाई दक्खिन के राज्य का यह वृतांत सन् १५२३ ईसवी में हुआ ॥

मुग़लों का घराना जिसका सौ बरस दिल्ली के राज्य में अधिकार रहा उसका बर्णन अब होता है ॥

मुंग़लों के राज्य का

बर्णन ॥

महम्मद ज़हूरुद्दीन जिसका उपनाम बाबर था वह सन् १४८३ ईसवी में उत्पन्न हुआ उसका संबन्ध माता के पक्ष से चंगेज़ख़ां तक पहुंचता था और पिता के पक्ष से तैमूर तक यह बादशाह लड़कपन से बड़ा साहसी था इसलिये उसका बाप जो अंदजान और फ़र्गानह का अधिकारी था उसने उसे बारह बरस की अवस्था में अंदजान के प्रबंध का अधिकारी किया बाप के मरजाने के पीछे बाबर गद्दी पर बैठा और वह समरकन्द को अपने अधिकार में लाया परंतु उसी समय में उसके भाई से झगड़ा उठा कि मुल्क मौरूसी उसके हाथ से निकलगया इसके सिवाय वह बीमार भी बहुत रहा और सेना भी इसके कहने पर न रही इस कारण उस से कोई ऐसा उपाय न बन पड़ा जो अपने दादा के मुल्क को फिर लेता कई बेर कई सौ आदमियों को साथ लेकर ठौर२ दिक्क होता फिरता रहा परंतु अपने साहस और बुद्धि-मानी से यह भरोसा रखता था कि कभी न कभी गद्दी पर बैठूंगा और एक जगत को अपने आधीन कर लूंगा ईश्वर

का करना ऐसा हुआ कि अंदजान के राज्य में कुछ ऐसी बातें हुईं जिन से यह सब अंदजान देश का अधिकारी हो गया और समरकन्द को भी जीत लिया इसके अनंतर उज़बक जाति के लोग जो तातार देश के निवासी थे उन्हों ने उस से समरकन्द को छीनलिया तब उसने काबुल जीतलिया और उसे अपनी राज धानी बनाया वहां बहुत सी सेना इकट्ठी करके उसकी सहायता से भरतखण्ड जीत लिया और यहां राज्य की ऐसी नीम डाली कि वह आगे के सब बादशाहों से अधिक नामी हो गया ॥

अटक नदी से जब सेना चली थी उस समय सब सेना बाबरशाह के पास पन्द्रह हज़ार से कुछ अधिक न थी उसी से राह में जो देश पड़ते गये उनको जीतता हुआ भरतखण्ड में आया तो इब्राहीमशाह की बहुत सी सेना बैरी से जामिली और बाबर की सिपाह ने बड़ी बीरता से बैरी की सेना पर छापे मारे और जब दोनों सेना लड़ाई पर झुकीं तो बड़ा घोर युद्ध हुआ उस में इब्राहीमशाह मारा गया और बाबरशाह जीता इब्राहीम शाह के मरजाने पीछे जो बैर की जड़ आगे से मुग़लों और अफ़ग़ानों में चली आती थी वह फिर कर नये सिरे से हरी हुई और अफ़ग़ानों के कितने एक सर्दार बाबरशाह से लड़ने को उद्यत हुए परंतु बाबर के सर्दारों ने उन से झगड़ा करना उचित न समझकर अपने बादशाह को इस काम से रोका परंतु शाह ने उनकी

सलाह न मानी और हुमायूं अपने बेटे की सहायता से सब अफ़ग़ानों और हिन्दुओं को कई बेर हटादिया और पांच बरस के अंतर में सब देशों का अधिकारी होगया सन् १५३० ईसवी में सूबह बिहार पर चढ़ने का बिचार कर रहा था कि उसी बीच में तपने आनकर ऐसा घेरा कि उसी में मरगया ॥

हुमायूंशाह का

वर्णन ॥

बाबरशाह के पीछे उसका बेटा हुमायूंशाह गद्दी पर बैठा उसी अंतर में हुमायूं के सगे भाई मिर्ज़ा कामरां ने काबुल और पंजाब को जीत लिया और हुमायूंशाह ने गुजरात के राजा और शाहइब्राहीम के पोते को जीता और इस काम के लिये उद्यत था कि बिहार का अधिकारी शेरख़ां जो थोड़ी अवधि से बंगाले और रुहतास का अधिकारी हो गया था उस से झगड़ा करे पर हुमायूं के भाई जो भीतरी सूत उस से मिलाप रखते थे इसलिये हुमायूं की सिपाह का बल न चल सका और हुमायूं हारकर दिल्ली को चला तब राह के बीच कर्मनासा नदी के तीर पर शेरख़ां के कहने से मरहटे की फ़ौज ने आन घेरा वहां से भी हुमायूंशाह हारकर बड़ी कठिनाई से थोड़े आदमियों समेत आगरे में पहुंचा और एक शूर बीर सेना इकट्ठी करके बैरी

से खूब लड़ा पर जीता नहीं अंत को क़न्नोज के पास हारकर कुनबे समेत अटक नदी में हो कर विलायत को चला गया ॥

शेरशाह का

वर्णन ॥

एक मनुष्य शेरखां सूर जाति में से पेशावर के पहाड़ों का रहनेवाला था और जिसका उपनाम शेर-शाह था वह सन् १५४१ ईसवी में तैमूर के घराने को निकाल करके दिल्ली की गद्दी पर आप बैठा और उसने अपने विजयों से राज्य की हद्दें अटक नदी के परले सिरे से बंगाले की खलीज तक बढाईं और सब प्रजा को प्रसन्न करके निहाल कर दिया और बड़ी २ इमारतें जिन से नाम चलता है वे बनवाईं जैसा तारीख़ फ़िरस्तह पोथी में लिखा है कि सिंधु नदी से बंगाले तक जो पंद्रह सौ कोस की दूरी है उस में ठौर २ मुसा-फ़िरख़ाने बनवाये और एक २ कोस पर एक २ कुवां और बादशाही सड़कों पर मुसाफ़िरों के लिये बड़ी २ मसजिदें बनवा दीं और उन में अपनी ओर से आचार्य और बांग देनेवाले नौकर रखदिये और ऐसा प्रबंध कर दिया कि जो कोई सराय में उतरता क्या छोटा क्या बड़ा वह सर्कार से खाने पीने की आवश्यक वस्तु पाता और राहों में दोनों ओर फलवाले पेड़ ऐसे

लगवा दिये कि मुसाफ़िर उनकी छाया में चले जावें और फलों को बेरोकटोक खाते जावें और ठौर २ हर एक शहर में घोड़ों की डाक नियत कर दी इस लिये कि सर्कार में तुरंत ही ख़बर पहुंचा करे और लोगों को व्योपार और चिट्ठी पत्री के भेजने में लाभ हो और आगरे से मांडऊ तक तीन सौ कोस का अंतर है उस अलंग में भी ऐसा ही प्रबंध कर दिया अर्थात् मेवहदार पेड़ रस्ते के किनारे २ पर लगवा दिये और पास २ मसजिद और सराय और कुवें बनवाये और उसके राज्य में ऐसी रक्षा थी कि जो चाहता मंज़िलों तक हाथ पर सोना उछालता चला जाता कोई यह न पूछता कि तुम कौन हो और कहां जाते हो और व्योपारी लोग सब राज्य भर में लाखों रुपये का माल लादे हुए बेधड़क जहां चाहते चले जाते थे॥

उस बादशाह ने मालवा और अजमेर के राजों से कई बेर लड़ाई करके उनको जीत लिया और एक बेर ऐसा संयोग हुआ कि अजमेर का राजा राजपूतों की पचास हज़ार सेना लेकरके चढ़ आया तो बादशाह ने बड़ी भीड़ देखकर सामना न किया और ऐसा पेच राजा के सर्दारों की ओर से कई ख़त झूठे लिखवाकर राहों में डलवा दिये संयोग से एक ख़त पर राजा की दृष्टि पड़ गई देखते ही उसे निश्चय होगया कि मेरे सब अधिकारी भीतरी सूत शाह से मिले हुए हैं और कुछ यह भी दूर नहीं है कि लड़ाई में ये

सब पीठ देजावें और मेरे साथ दग़ा करें इसलिये लड़ना सलाह नहीं यह विचारकर पीछे ही को हटा और बहुतेरा उसके अधिकारियों ने शपथ खाकर समझाया परंतु उनकी ओर से उसको भरोसा न पड़ा तब एक सर्दार को बन्हानामी जो राज्य के अधिकारियों में से था वह उदास होकर कितने एक सर्दारों समेत न्यारा होगया उस में और शेरशाह में बड़ी लड़ाई हुई दोनों ओर की सिपाह ने अपनी २ वीरता दिखलाई यद्यपि मुसलमानों की सेना अस्सी हज़ार थी और राजपूतों की फ़ौज केवल दस हज़ार थी पर इस पर भी उन्हों ने ख़ूब संभलकर लड़ाई की और थिरता के साथ सामना किया और अंत को हिंदुओं का लशकर एक दिन रात लड़कर हारगया और सारी सिपाह उस सर्दार की मारी गई और आप भी वह सर्दार मारा गया उस विजय के पीछे ऐसा संयोग हुआ कि जब बादशाह सन् १५४५ ईसवी में रणथंभोर को घेरे हुए पड़ा था तब अचानक बारूतख़ानह आग से उड़ गया उस में वह भी जलकर ख़ाक होगया शेरशाह के पीछे बड़ी लड़ाइयां रहीं और राज्य में बड़े झगड़े रहे उनके बर्णन का बड़ा बिस्तार है इसलिये उसे छोड़ दिया है ॥

घर के झगड़ों के निबड़ जाने पीछे उसका भतीजा अहमदशाह जिसका उपनाम सिकन्दर था वह गद्दी पर बैठा ॥

उस अंतर में हिंदुस्तान के बीच कई तरह की उपाधें उठाने से हुमायूं डामाडोल फिरता रहा जिस समय बैरी पीछा न छोड़ता था उस समय उसकी बेगम गर्भ से पूरे दिनों थी और उसके साथ केवल थोड़े से आदमी रह गये थे इसलिये दुखी होकर अजमेर के मालदेव राजा का आसरा लिया और उस से सहायता चाही पर उस राजा ने ऊपरी मन से तो आदर सत्कार किया पर भीतरी मन से चाहता था कि इसे किसी बहाने से पकड़ करके बैरी को सौंप दूं परंतु एक राजपूत भलामानस जो पहले हुमायूं के पास नौकर रह चुका था उसने इस बात से बादशाह को जतलादिया तब हुमायूं अपने साथियों समेत आधी रात के समय वहां से चलदिया और सौ कोस तक कहीं दिल जमई से न ठहरा और राह में उसके सब आदमियों ने पानी न पाया और बहुत सी बिपत्तें भोगीं क्योंकि वहां की धरती रेतली थी और कोसों तक पानी नाम को भी न मिलता था सैकड़ों आदमी और जानवर मारे प्यास के मरगये और जब लोगों ने अपने पीछे एक गुब्बारासा उठा हुआ आता देखा तो सब ने यह निश्चय किया कि कोई बैरी पीछा किये चला आता है तब सब के सब अपना २ जी छिपाकर जहां तक भागा गया भागे संयोग से अंधेरी रात में हुमायूं बेगम और बीस सवारों समेत राह भूलकर अपनी सेना से न्यारा होगया और सवेरा होते ही बैरी के एक समूह ने आन घेरा

हुमायूं ने बचने का कोई उपाय न देखा तो लड़ने को उठखड़ा हुआ और उन्हीं कितने एक आदमियों से ऐसा लड़ा कि शत्रुओं के पैर उखाड़ दिये और अचानक एक तीर बैरी के सर्दार को ऐसा लगा कि उसका पूरा काम होगया इस से बैरी के लोगों का धीरज जाता रहा और जिधर तिधर तित्तर बित्तर होके भाग निकले और हुमायूं विजय पाकर वहां से चला परंतु तीन रात और दिन राह में कहीं पानी की सूरत न दीख पड़ी अंत को जब कितने मनुष्यों समेत अमरकोट जो सिंधु के पास है उस में पहुंचा तो वहां के राजा ने बड़े आदर से लिया और जैसा कि आदर सत्कार महमान का उचित है वैसा ही किया उसी जगह अकटूबर की चौदहवीं तारीख़ को सन् १५४२ ईसवी में अकबर उत्पन्न हुआ और फ़ारस के बादशाह तहमासपशाह ने जब सुना कि हुमायूं ने हिंदुस्तान के रहनेवालों से बहुत दुःख पाया तो एक ख़त लिखा उस में यह आशय था कि तुम यहां चले आओ मैं तुह्मारा सब तरह से सहायक हूं और जहां तक हो सकेगा तुह्मारे साथ भला सुलूक करूंगा इसको बांचकर हुमायूं तो जी से दुखी हो ही रहा था तुरंत ही फ़ारस को चला और असफ़हां में एक बरस तक रहा निदान फ़ारस के शाह ने उसको दस हज़ार सवार देकर कहा कि जो तुम से होसके तो कुछ अपने मौरूसी राज्य से कुछ राज्य जीतलो हुमायूं इस बात को चाहता ही था धन्य मानकर पहले काबुल और क़ंधार

पर चढ़ा और अपने भाई जिन्हों ने देश दबा लिया था उनको जीत लिया इसके पीछे छ: बरस के अंतर में अपने सब देशों में अधिकार कर लिया उस समय में उसका एक भाई कह सुन करके उस से आमिला उसने बीरता के ऐसे २ काम किये कि हुमायूं के मन से जो वैमनस्य पहले थी वह जाती रही और बहुत प्रसन्न होकर अपने बेटे जलालुद्दीन अकबर का व्याह उसकी बेटी से कर दिया यह भाई उसका किसी लड़ाई में मारा गया और दूसरा भाई जो बड़ा बखेड़िया था और इसकी भलाई पर ध्यान न करता था लाचार होकर उसको हुमायूं ने क़ैद किया तो सब को निश्चय था कि हुमायूं इसको अब जीता नहीं छोड़ेगा परंतु ईश्वर के डर से उसने भाई को जी से न मारा केवल उसकी आंखें निकलवा डालीं इसके अनंतर एक दिन हुमायूं कामरां के मिलाप को गया कामरां ने अभ्युत्थान देकर के कहा कि बादशाह की प्रतिष्ठा और बिभव यहां आने से कुछ कम न हुआ पर इस नीच गंवारे का यश स्वर्ग तक फैल गया ॥

यह सुनकर हुमायूं का मन उमड़ा और फूट २ कर देर तक रोता रहा अंत को कामरां हुमायूं के संमत से मक्के को गया और वहां तीन बरस रहकर मरगया ॥

हुमायूं पंद्रह हज़ार सवार और कितने ही पंजाबी लोग साथ लेकर हिन्दुस्तान पर चढ़ा और जिस पर उसने चढ़ाई की वह उसके आधीन होगया और सर-

हिन्द के पास सिकन्दर से बड़ी लड़ाई हुई और सिपाह खूब लड़ी पर परिणाम में सिकन्दर न ठहर सका और पहाड़ की ओर भाग गया ॥

और हुमायूं बाबर का बेटा दिल्ली की गद्दी पर बैठा ॥

गद्दी पर बैठने पीछे हुमायूं ने बहुत दिनों तक राज्य किया एक दिन किसी ढब से पुस्तकालय की छत पर चढ़ गया वहां देर तक टहला किया पीछे थक करके हवा खाने को बैठ गया इस में बांग देनेवाले ने बांग दी चाहा कि आसा टेककर उठे तो लकड़ी फिसली वह संभल न सका और नीचे गिरकर सन् १५५५ ईसवी में मरगया ॥

जलाउद्दीन महम्मद अकबर बादशाह का वर्णन ॥

हुमायूंशाह के मरने पीछे हिन्दुस्तान की राजगद्दी ने ऐसे राजाधिराज के बैठने से शोभा पाई कि जिस की समान दूसरी गद्दी इस देश में तो क्या किसी देश में भी न हुई होगी और अकबर हुमायूं का बेटा था जिसके प्रताप के सामने किसी तरह की उपाधि और बैरी का बल न चल सका और जिस पर भी बाप के मरने के समय उसकी अवस्था बारह बरस से अधिक न थी परंतु किसी का बूता न पड़ा जो उसको गद्दी पर बैठने को रोकता और लड़कपन में उसने शिचक

के हाथ से पढ़ने के विषय में बड़े २ क्लेश सहे और बाप के बैरियों से बहुतसी बिपतें पाईं ॥

तिस पर भी अपनी बुद्धिमानी और चतुराई से कितने एक दिनों में राज्य की रीतें और देश के प्रबंध का विषय खूब समझने लगा और हर एक की भलाई बुराई को अच्छी तरह पर पहचानने लगा और भाग्य वश से बैरामखां शिक्षक भी उसको ऐसा मिला जो तन मन से उसकी भलाई और शुभ में लगा रहता था पर एक दोष नटखटी और फिर जाना उसकी प्रकृति में था और सब तरह से अपने स्वामी की भलाई और वृद्धि में लगा रहता था ॥

अकबर को गद्दी पर बैठे हुए कुछ दिन बीते थे कि हैमूं बनिया जो पहले कमीन था परंतु सामर्थ बड़ी रखता था वह फिर गया और बड़ी सेना इकट्ठी करके मुग़लों से दो लड़ाइयों में जीता यहां तक कि अकबर को सतलज पार तक हटा लेगया उसने अपने बिभव की वृद्धि के लिये जैसा कि श्रम प्रारंभ में किया था उसी प्रकार करता रहता तो इस बात में संदेह न था कि तैमूर के घराने का नाम और निशान भरतखण्ड में न रखता परंतु थोड़े पानी का बुलबुला था तुरन्त ही उतरा आया और वह दिल्ली में रह करके प्रतिष्ठा और धूम धाम के बढ़ाने में लगगया और उस थोथे धंधे में पड़ करके थोड़े से लाभ के लिये ऐसा भूल गया कि अपने फल को भी हाथ में न लासका इस

अंतर में मुग़लों ने लाहौर में भीड़ इकट्ठी करके दिल्ली पर चढ़ाई की और पानीपत में दोनों सेनाओं का साम्ना हुआ तो हैमूंनामियों की सेना हार गई और वह आप पकड़ा हुआ शाह के आगे आया उस समय बैरामख़ां मंत्री ने शाह से कहा कि पृथ्वीनाथ इस अधर्मी को मारकर धर्म लीजिये यद्यपि अकबर के चित्त में न था कि इसकी हत्या मैं लूं पर बैरामख़ां के कहने से नंगी तलवार हाथ में लेकर हैमूं के सिर से छुवा दी तब बैरामख़ां ने उसी समय एक हाथ ऐसा मारा कि हैमूं का सिर बदन से कटकर भुट्टासा गिर पड़ा॥

इस समय तक तो बैरामख़ां अकबर की भलाई में रहा परंतु आगे को अपनी टहलों और कामों को छोड़ कर अभिमान करने लगा तो अकबर भी अपनी सामर्थ को जांचकर उस से ऐसा खिंचा रहता कि बैरामख़ां खुला. गुली फिर बैठा परंतु हार करके इस दशा को पहुंचा कि अकबर से अपने अपराधों को क्षमा कराना चाहा अकबर के मन में तो वैमनस्य थी ही नहीं उसका अपराध क्षमाकर दिया वरन उसके लेने के लिये बाद-शाही सामान भेजा बैरामख़ां आया इस तरह पर कि द्वार की दिहली पर पैर रखते ही नंगा सिर करके रोता हुआ आकर राजसिंहासन के नीचे सिर झुका कर खड़ा हो गया तो अकबर ने पुराना शुभकारी मंत्री समझकर दोनों हाथों से उसका सिर उठाया

और उसे मंत्री के स्थान पर सब अधिकारियों से ऊपर बैठाया और बड़े मोल की खिलअत दी और कहा कि जो बैरामखां सिपाहगरी का काम चाहे तो कालपी और चंदेरी की हुकूमत उसके लिये मवजूद है और जो मेरे पास रहना चाहे तो भी उसे उसी का पहला ही अधिकार मिलेगा और जो उसका चित्त जप तप और ईश्वर के सेवन करने को चाहे तो मक्के की यात्रा करे और सर्कार की सिवा उसकी प्रतिष्ठा और बड़प्पन के अनुसार वहां तक पहुंचाने के लिये साथ कर दी जाय यह सुनकर बैरामखां ने कहा कि जब दास एक बेर अपराधी ठहर चुका तो अब किस मुंह से आप के पास रहने को कहे और मेरी प्रार्थना है कि मेरे अपराध को क्षमा कीजिये इसी को मैं दोनों लोक के लिये शुभकारी समझता हूं और इसी को आपके सेवन का उत्तम फल जानता हूं और अब मेरी अभिलाषा यह है कि सब को छोड़कर मन को परमार्थ में लगाऊं और आप से आज्ञा हज्ज की होवे अकबर ने हज्ज के लिये आज्ञा दी तो बैरामखां बहुत भीड़भाड़ के साथ मक्के को चला परंतु इसने जिसके बाप को एक लड़ाई में मार डाला था उसने राह में बैरामखां को मार कर अपने बाप का बदला लिया इस स्थान पर यह कहावत स्मरण आती है ॥

क्या खूब सौदा नक़द है इस हाथ दे उस हाथ ले ॥

अकबर ने बड़े न्याय और धर्म के साथ राज्य किया और जिस पर चढ़ाइयां लगातार रहीं तो भी उसने माली और मुल्की काम और देश के प्रवन्ध के बिषय में बहुत सा समय लगाया और सब मुक़द्दमों और महसूलों के लिये ज़ावते बांधे यथार्थ में उसने इतने क़ानून और आईन जारी किये कि उनके बर्णन करने की समाई इस संक्षेप इतिहास में नहीं है॥

अब्बुलफ़ज़ल के अकबरनामे की कई पंक्तियों का आशय जो यहां लिखते हैं वह अकबर के गुण और चाल ढाल की व्यवस्था के जानने के लिये उपकारी है॥

इस बादशाह का ध्यान इसी बात पर रहता कि सब मनुष्यों के मनों को वश में लावे और जिसके पास अनगिन्ती काम और विचार रहते थे तो भी जो बातें प्रजापालक और न्याय करनेवाले बड़े राजाओं को अवश्य हैं उन से उसका मन कभी विकल नहीं होता बरन जब देखो, तब प्रसन्न चित्त दीख पड़ता है और कभी ईश्वर की आज्ञा से प्रतिकूल नहीं होता और सदा ईश्वर की प्रसन्नताई में लगा रहता है और सदा गुण और बड़प्पन की अभिलाषा रखता और गुणवान् और पण्डितों की संगति करने की लालसा रखता और अपनी तीव्रबुद्धि और उत्तम प्रबंध में अहंभाव नहीं लाता और हर एक की बात सुनता है इस बिचार से कि न जानिये किस के मुंह से क्या बात सुनने में आवे और किस बात का भेद खुल जावे और इतना विभव और ऐश्वर्य होने पर

भी कभी इसके मन में क्रोध नहीं आता वरन उसका मन अच्छे कामों में लगा रहता है और किसी मत और पंथ की निन्दा की बात उसके मुंह से नहीं निकलती और आवश्यक कामों में कभी ढील और सुस्ती नहीं करता और धर्म के प्रभाव से जो काम करता है वे सब ईश्वर संबन्धी होते हैं यह बादशाह हर बात में ईश्वर का धन्यवाद करता है और सदा अपने कामों पर ध्यान रखता है विशेष कर संध्या सवेरे और दो पहर आधी रात के समय में अपने मन को सब कामों से हटाकर ईश्वर की ओर लगाता है और अपराधियों के अपराध को क्षमा करता है और प्रजा के सुख चैन में ध्यान रखता है और विषय भोगादि की इच्छा नहीं करता और रात दिन में केवल एक बार खाता है और सोता भी बहुत कम है और शेष समय को संसार के आवश्यक कामों के पूरा करने में लगाता है संध्या को थोड़ी देर आराम करके फिर काम में लग जाता है तदनंतर एकांत में बुद्धिमान् और पण्डितों को इकट्ठा करके उनकी सभा में बैठकर बुद्धिमानी और चतुराई की बातें सुनता है और विद्याओं के तात्पर्य्य और गूढ़ताओं को अपनी तीक्षण बुद्धि से विवेचना करता है और नये २ क़ानून बनाता और पुरानी भूलों को शुद्ध करता है और आगमों के लिये ठीक ज़ाबते नियत करता है और उसकी सभा में इतिहासवेत्ता भी रहते हैं वे पुरानी रीतों और प्रबन्धों को सुनाते हैं इसके

पीछे बादशाह कुछ रात गये तक आमिल और हाकिमों को अर्ज़ियां सुनता है और हर एक अर्ज़ी पर उचित हुक्म चढ़ाता है और सूरज निकलने से पहले सब हाली मुवाली इकट्ठे हो जाते हैं और दिन निकलते ही बादशाह का दर्शन करके सिर झुकाते हैं उसके पीछे बहुत से न्यारे कामों को समाप्त करते हैं उस समय थोड़ी देर तक बादशाह सोता है ॥

इस बादशाह ने लड़ाइयां भी बहुत सी कीं कभी कोई सूबहदार लड़ा कभी किसी हिंदू राजा से लड़ाई हुई और कभी जिनके राज्य की हद्दें उसके राज्य से मिली थीं उन महम्मदी बादशाहों से जो लड़ाई हुईं उनका जो वर्णन व्योरेवार लिखूं तो कई ग्रंथ के ग्रंथ बनजावें पर संक्षेप यह है कि मालवा दो बेर उसके अधिकार से निकल गया और दोनों बेर फिर उसने जीत लिया इसी तरह सूबह गुजरात भी बड़ी लड़ाई से हाथ आया काबुल में उसका भाई फिर गया और अंत को हारा और फिर क्षमापन कराने से बचा और बंगाले का सूबह दो बेर फिर गया और कश्मीर जो उस समय तक किसी से सर न हुई थी उस में बादशाह आप चढ़ा और दक्खिन की चढ़ाई में अपने बेटे को भेजा निदान जहां उसकी सेना का झंडा जाता था वहां उसके साथ विजय भी आगे चलती थी उसकी विजयशाली सेना ने ख़ान देश भी जीत लिया और बरार का सूबह सुलह से हाथ लगगया और अहमद नगर

भी बहुत दिनों तक लड़कर अधिकार में आगया इस बादशाह की सब से पिछली यह लड़ाई थी. जिस समय वहां से आगरे की ओर लौट करके आया था और यह बादशाह ५१ बरस तक राज्य करके सन् १६०५ ईसवी में वैकुंठ बासी हुआ और सारी उम्र माली और मुल्की कामों के प्रबंध करने में नामी और यशस्वी रहा॥

बादशाह का पुत्र सलीम जिसका प्रसिद्ध नाम

जहांगीरशाह है उसका बर्णन॥

अकबर के पीछे उसका एकलौता बेटा जहांगीर गद्दी पर बैठा यद्यपि लोगों ने मिल करके चाहा था कि जहांगीर के बेटे खुसरव को गद्दी पर बैठावें परंतु उनकी कुछ न चल सकी और जहांगीर गद्दी पर बैठ करके लड़के के मोह से एक वेर तो लड़के के ऊपर चमा करगया परंतु खुसरब फिर इस से फिरगया तब बादशाह ने उसे जीतकर क़ैद किया और उसके साथियों में से एक २ को जान से मरवा डाला॥

उस बादशाह के इतिहास में सब से बड़ा वृत्तांत यह है कि एक बड़े अमीर की व्याही स्त्री पर उस का मोहित होजाना और उस स्त्री को घर में डालने के लिये उसके पति को मरवा डालना इसका व्योरा इस तरह पर है कि एक मनुष्य बड़े घराने का बिगड़ा हुआ तातारियों की जाति में से था उसका नाम

ख़्वाजह अयाज़ था वह समय की वैपरीत्य से बिगड़ते बिगड़ते जब ऐसा हो गया कि संध्या तक भी रोटी न मिलती तब स्वदेश को छोड़ करके अपनी दुखियारी स्त्री समेत हिंदुस्तान को चला उन दिनों उसकी स्त्री गर्भ से थी जब ये दोनों हिंदुस्तान और तातार के रस्ते में जो जंगल बड़ा भयानक पड़ता है उस में आये तब एक लड़की उत्पन्न हुई जिसके माथे को देखकर जान पड़ता था कि यह बड़ी भाग्यशाली होगी और मा बाप तो दरिद्री थे ही उन्हों ने दरिद्रदशा में संतान का मोह छोड़ा और कुछ यह समझे कि हम आपही भूखों मरते फिरते हैं इस बच्चे का पालन क्योंकर करेंगे और कहां २ लिये फिरेंगे और कुछ इस बात से कि यह लड़की अभागिनी और मनहूस है जो ऐसे बिपत्ति समय में उत्पन्न हुई यह बिचारकर उस लड़की को वहीं छोड़कर आगे को चलदिये चलने को तो चले आये परंतु पेट की आग बुरी होती है मोह ने ऐसा घेरा कि दो २ पैर चलकर पीछे फिर २ कर देखते थे अंत को मा का पैर आगे को न बढ़ा और एक जगह खड़ी होकर रोने लगी यहां तक कि रोते २ वहीं रेतले पटपड़ में गिरपड़ी और बिन पानी मछली की तरह तड़फने लगी बच्चा २ कह कर फूट २ कर रोती थी परंतु उस में यह सामर्थ कहां थी जो जाती और उस लड़की को गोद में उठालाती अयाज़ का मन भी उसकी इस दशा को देख करके भर आया

तो कहने लगा कि धीरज करो मैं जाता हूं और बेटी को तुम्हारे पास लिये आता हूं आगे जैसा भाग में लिखा है वैसा होगा निदान उन्हीं पैरों पीछे फिरा और जिस जगह पर छोड़ आया था उसी जगह जब पहुंचा तब वह क्या अचरज देखता है कि उस लड़की के पिंडे में एक काला सांप लिपटा है प्यार के मारे निडर होकर चलागया तो सांप ने उसके भय से एक ओर की राह ली और एक खोखले पेड़ में जाघुसा अयाज़ ने बच्चे को जीता पाकर ईश्वर का धन्यवाद किया और झपटकर गोद में उठाकर गले में लगाया और मुंह चूंबा उसकी मा के पास ले आया उसी समय से दोनों की बिपत्ति जाती रही और बुरे दिन गये भले आये उस ठौर से थोड़ी दूर चले थे कि मुसाफ़िरों का एक झुंड पीछे से आया और उन लोगों को इनकी दशा देखकर दया लगी और जो कुछ बन पड़ा उन्हों ने राहख़र्च के लिये दिया स्त्री पुरुषों ने ईश्वर का धन्यवाद किया और मंज़िलें चलते हुए उन्हीं की सहायता से लहौर तक कुशल क्षेम से आपहुंचे तो अयाज़ पुरुष बुद्धिमान् और चतुर और अग्रसोची था तुरंत ही जिविका से लगगया और धीरे २ थोड़े दिनों में ऐसा बढ़ा कि अकबर की कचहरी में मीरबख़्शी के अधिकार में हो गया और उसने अपनी बेटी की शिक्षा में बड़ा श्रम किया था सो उस लड़की में विद्या और सुंदरता दोनों थीं इसी से बादशाह का

पुत्र सलेम उस पर मोहित होकर उसकी प्रीति के फंदे में फंसगया परंतु इस से पहले उसकी सगाई शेर अफ़ग़न के साथ हो चुकी थी इसलिये अकबर ने अपने पुत्र के लिये सगाई का छुड़ानी न्याय न समझकर इस बात में कुछ न कहा और उसका व्याह शेर अफ़ग़न के साथ हो गया विचारा सलेम जिसका प्रसिद्ध नाम जहांगीर है उस समय तो बाप के डर से मुंह देखता रहगया परंतु जब आप गद्दी पर बैठा तो अधिकार पाते ही अपने अभीष्ट के सिद्ध करने के सोच में लगा और शेर अफ़ग़न अपनी चौकसाई से कई बेर उसके पंजे से निकल २ गया था निदान वह मारा गया और उसकी हुसेन स्त्री को बादशाह ने बादशाही हुरम के महल में पहुंचाया और उसी स्त्री का नूर-महल नाम हो गया परंतु बादशाह लज्जा से चार बरस तक उस से न्यारा रहा तिस पीछे एक दिन बादशाह की दृष्टि उस पर पड़ी देखते ही काम की आग से व्याकुल हो गया फिर उसी की प्रीति के द्वारा अयाज़ और अयाज़ के दोनों बेटों को बड़े २ अधिकारों पर कर दिया और राज्य के सब काम काज उनको सौंपे परंतु जब तक अयाज़ जिया उसकी भलाई से किसी ने अपनी हक़्क़तलफ़ी की शिकायत न की बरन सब लोग उसकी गंभीरता और सरलता से उसकी बुद्धि को देखकर डाह की जगह प्रसन्न होते थे और उस मंत्री के समय में ऐसा न्याय होता था कि एक समय तक हिंदुस्तान

के लोग उसको स्मरण करते रहे और अयाज़ के मरे पीछे बहुत झगड़े उठे जिनका बिगड़ना बड़ी कठिनाई से हुआ ॥

जहांगीर का बेटा खुर्रम जिसका प्रसिद्ध नाम शाहजहां है उसने प्रतिकूल होकर पहले अपने भाई खुसरव को मारा फिर सूबह दक्खिन में बाप के ऊपर फ़ौज को चढ़ा लाया और नर्मदा के किनारे में लड़ा पर जहांगीर के प्रताप से उसकी सेना हार गई और वह आप पकड़ने से बचकर कई बरसों तक डामा डोल फिरता रहा ॥

नूरमहल अपने बाप के मरते ही राज्य में झगड़ा मचाने लगी जिस समय शाहजहां प्रतिकूल हो गया था उस समय महावतखां की बीरता बड़े काम आई थी और जहांगीर ने उसको अपनी कृपा से बढ़ाया था परंतु नूरमहल जो किसू को न देख सकी थी उसने बादशाह के मन को शीघ्र ही उसकी ओर से फेर दिया और ख़फ़गी के ख़त महावतखां को जाने लगे अंत को जिस दृढ़ गढ़ का अधिकारी महावतखां था वह नूरजहां के पक्ष के किसी आदमी को सौंपा गया और महावतखां के नाम दृढ़ हुक्म गया कि तुम सर्कार में जल्द आवो यद्यपि बादशाह का तात्पर्य इस हुक्म से साफ़ जान पड़ता था परंतु महावतखां अपनी निरपराधता से सर्कार में बेधड़क जाने को उद्यत हुआ उस समय पांच हज़ार राजपूत उसकी सहायता में थे जब बादशाही सेना के पास पहुंचा तब उसने

मै० ए० जी० दीक्षित,

अपने किसी संगी को बादशाह के पास भेजा इसलिये कि उसकी भलाई और बैरियों के छल को बादशाह को जतला दे परंतु जब दूत सर्कार में पहुंचा तब शाह ने उसको देखते ही क़ैद करके बेइज्जत किया यह सुनकर महावतख़ां बादशाही सेना के रस्ते में जा कर पकड़ने के लिये छिप रहा जब बादशाह वहां से निकला झटपट निकलकर उसने नूरमहल समेत बाद शाह को पकड़ लिया तिस पर भी उस सज्जन ने बचा दिया और बादशाह से कुछ न बोला बरन बादशाह के कहने से नूरमहल भी जीती छोड़ दी इस भलाई के पलटे नूरमहल उसके ख़राब करने के पीछे पड़ी यहां तक कि उसके मारने का इनाम नियत करदिया इस तरह डरकर महावतख़ां ठौर २ भागता फिरा परंतु उस छल के समय उसने नूरजहां के भाई आसफ़ख़ां का आसरा लिया और आसफ़ख़ां ने उस दुर्दशा में उसकी रक्षा की निदान उस समय के झगड़ालुओं को देख करके सब को निश्चय होता था कि भरतखण्ड से अब रक्षा करने का ब्यौहार मिट जायगा और यह हो रहा था कि यह राज्य बिगड़ जायगा परंतु इसी में भला हुआ कि जहांगीरशाह इस संसार से पधार गया और शाहजहां सन् १६२७ ईसवी में बेझगड़े और उपाधि के गद्दी का अधिकारी हुआ ॥

शाहजहां का

बर्णन ॥

शाहजहां ने गद्दी पर बैठ करके तैमूर के घराने में से सिवाय अपने के और किसी का नाम बाक़ी न छोड़ा और आसफ़ख़ां को मंत्री का अधिकार और महावतख़ां को सेनानी का अधिकार दिया उन्हों ने अच्छी तरह अपने २ कामों को पूरा किया थोड़े दिन पीछे एक मनुष्य लोदी जो हिंदुस्तान के अगले बादशाही घराने से था उसने राज्य का दावा करके दक्खिन में झगड़ा उठाया परंतु बड़ी लड़ाई के पीछे उसके चार बेटे जो बड़े शूरबीर थे वे लड़ाई में मारे गये और अंत को वह आप बड़ी लड़ाई करके बादशाही सेना के सामना करने में मारा गया ॥

शाहजहां दक्खिन में लगातार उपाधें भोगता रहा और उसके दारा और शुजाअ और औरंगज़ेब और मुरादबख़्श जो बेटे थे उनकी सहायता से नर्मदा के दक्खिन की ओर जो सब सूबे मुसलमानों के अधिकार में थे वे अपने आधीन करलिये पीछे उसके बहुत बीमार हुआ उस समय बड़ा बेटा दारा जो बलवान् और सज्जन था परंतु चित्त से कठोर था उसने राज्य अपने आधीन करलिया तो तुरंत ही तीनों भाई उस से लड़ने को उपस्थित हुए और शुजाअ ने इस काम में अगुआई की इसी अंतर में शाहजहां को आराम हो गया और

दारा ने भलाई से बादशाही अधिकार जों का तों बाप को सौंप दिया तब भी शुजाअ अपने बिचार से न हटा राजधानी तक लड़ने को पहुंचा परंतु दारा के बेटे सलेमान ने एका एकी उस पर चढ़ करके ऐसा हरा दिया कि शुजाअ गंगा पार की ओर भाग गया और औरंगज़ेब ने दूरंदेशी सोचकर मुराद को बाड़ पर रक्खा और इन दोनों भाइयों के लशकर मिलकर नर्मदा के किनारे आये वहां दारा भी लड़ने को उद्यत था पर औरंगज़ेब एक दिन सब डेरे जों के तों खड़े छोड़ करके चुपके से १५ कोस नदी के चढ़ाव की ओर से उतरकर चला आया और दारा को पीछे छोड़कर राजधानी की ओर बढ़गया तो दारा ने ख़बर पाकर जल्दीकर उसे राह में जा पकड़ा उस समय बड़ी लड़ाई हुई दोनों भाइयों ने अपने पौरुष दिखाये और देर तक दोनों बराबर लड़ते रहे अंत को दारा एक निमक-हराम सर्दार के कहने से हाथी से नीचे उतरा और सेना ने जाना कि हमारा मालिक मारा गया उसी समय सब सेना तित्तर बित्तर हो गई और भागनेवालों के रेलें में दारा भी न ठहर सका इस तरह पर औरंग-ज़ेब ने बिजय पाकर राज्य आधीन कर लिया ॥

औरंगज़ेब के राज्य का
वर्णन ॥

लड़ाई के पीछे औरंगज़ेब ने अपने बाप शाहजहां को पकड़कर मुराद को भी क़ैद किया और उसके पीछे शुजाअ की ओर झुका ऐन लड़ाई के समय में जसवंतसिंह राजपूत औरंगज़ेब से न्यारा होकर उसकी सेना पर ऐसा पड़ा कि सब को बिकल कर दिया जो औरंगज़ेब उस समय धीरज न रखता तो काम पूरा होचुका था पर इस आपत्ति में भी अपने हाथी पर बैठा रहा और दोनों भाइयों में बड़ी लड़ाई हुई उस समय में औरंगज़ेब के एक सर्दार ने बढ़ करके शुजाअ के हाथी को घायल किया और उस ओर से भी एक सर्दार ने अपना हाथी औरंगज़ेब के हाथी के पास लाकरके ऐसी टक्कर लगवाई कि बादशाह का हाथी घोंटों के बल बैठगया उस काल में औरंगज़ेब घबराकर हाथी से उतरने लगा इतने में एक सर्दार ने ललकारकर कहा कि सावधान हाथी से मत उतरना औरंगज़ेब का थोड़ा ढारस बंधा कि लड़ाई फिर होने लगी उसका हाथी फिर घबराके भागा चाहता था परंतु उसके पांवों में ताला डलवा दिया गया इस रीति से हाथी लड़ाई में खड़ा रहा परंतु जो भूल दारा से हुई थी औरंगज़ेब से भी होती २ बच गई थी वही शुजाअ से हुई हाथी से उतर घोड़े पर सवार हुआ हाथी से उतरना क्या था गद्दी से उतरना था सब सेना हौदा

... ए. पा. बीका...
... छीपर

ख़ाली देखकर भाग उठी इस तरह उस खेत में भी औरंगज़ेब जीता ॥

शुजाअ़ ने बंगाले की राह ली और औरंगज़ेब के बेटे महम्मद ने उसका पीछा किया परंतु शुजाअ़ की बेटी पर मोहित था इसलिये मोह के बंधन में आकरके उस से जामिला और शुजाअ़ की बेटी से उसका ब्याह हुआ औरंगज़ेब बड़ा चतुर था तुरंत ही शुजाअ़ और महम्मद के मनों में फूट करवा दी उसके पीछे महम्मद को बरतफ़ कर पकड़ लिया और ग्वालियर के क़िलअ़ में क़ैद रक्खा वहीं वह मरा और शुजाअ़ ने भागते २ अराकान के राजा का आसरा लिया परंतु वहां के नामर्द राजा ने उसे लड़के बालों समेत मरवाडाला ॥

इस अंतर में दारा ने अजमेर की ओर फिर थिरता पकड़ी परंतु औरंगज़ेब ने फिर वहां भी हरा दिया और एक निमकहराम सर्दार जिसे दारा ने दो बेर जी से बचा दिया था उसने दारा को पकड़वा दिया इस तरह दारा क़ैद होकर दिल्ली में आया और प्रसिद्ध करके मारा गया ॥

वह निमकहराम भी जिसने पकड़वा दिया था अपने किये हुए को पहुंचा कि लोगों ने उसके टुकड़े २ कर डाले ॥

दारा की तरह उसके बेटे सलेमान को भी श्रीनगर के राजा ने जिसके शरण में गया था पकड़वा दिया और शाहजहां सात बरस से अधिक क़ैद रह करके

सन् १६६६ ईसवी में बंदीघर के बीच मरगया उसके मरने के पीछे औरंगज़ेब के मन में राजगद्दी के मध्ये किसी तरह का खटका न रहा ॥

मरहटों के अधिकार पाने का

प्रसंग ॥

इसी अंतर में एक नई जाति जो भरतखण्ड में बहुत नामी मरहटे हुए वे दिनों दिन बलवान् होते जाते थे ये लोग प्रारंभ में गुजरात से अटक के किनारे पर पहाड़ के जो बिभाग थे उनके बीच बसते थे और कठोर चित्त और लड़ाई की बीरता रखते थे उन में से एक मनुष्य सेवाजी नामी बड़ा साहसी और जयशाली हुआ उसका बाप साहजी किसी दरिद्री घराने से था परंतु दक्खिन की लड़ाइयों में छल बल से उसका काम बनता गया और राज के ठीक उपाधि के समय में सेवाजी उत्पन्न हुआ था इसलिये समय के अनुसार उसके बाप ने तीरंदाज़ी और नेज़ह चलाने का गुण उसे सिखाया और घोड़े पर सवार होने का अभ्यास करवा दिया सेवाजी जब बड़ा हुआ तो अपने बड़ों के मत और पंथ को बहुत मानता था और मुसलमानों से बैर रखता था क्योंकि उस आलमगीरी समय में उनके हाथ से हिंदुओं ने बहुत उपाधि और दुख भोगे थे और औरंगज़ेब ने राज विषयक पहले कुकर्मों के छिपाने के लिये और मुसलमानों को प्रसन्न रखने के लिये हिंदुओं को तलवार

के बल से मुसलमान करने का प्रारंभ किया था और समझा था कि जो दाग़ मेरे नाम को अपने कुल के नाश करने से लग गया सो प्रजा के मारने से धुल जायगा निदान इन अधर्मों से सेवाजी और बहुत से हिंदू उसके भीतरे बैरी हो गये और यही अधिक कारण मुग़ल के राज नष्ट होने का हुआ ॥

सेवाज़ी के साथी बहुधा मावली जाति के पहाड़ी लोग थे जो दक्खिन की पहाड़ी श्रेढी में रहते थे उन्हीं से देश का पैसा उघवाता था और उन्हीं से देश में लूट करवाता था उसके बिचार बड़े थे और उस उपाधि की दशा में उसने अपना बनता इस ढब से बनाया कि किसी को ख़बर भी न हुई और जब प्रघट हुआ तो उसके आधीन बड़ा देश हो गया था और बीरता का बल रखता था ॥

निदान बीजापुर के हाकिम ने उसके आधीन करने को अफ़ज़लखां के साथ एक शूरबीर सेना भेजी सेवाजी ने एक उपाय सोच करके किसी धूर्त ब्राह्मण के द्वारा अफ़ज़लखां को मिलाप करने के लिये राज़ी किया और फ़ौज को घात में छोड़ करके आप मिलने को गया जिस समय कि दोनों बग़लगीर होने लगे उस समय फ़ुरती से शेर का पंजा अफ़ज़लखां के शरीर में मारा उसी दम एक बार फरसे की भी मारी इतने में उसकी फ़ौज भी निकलकर बैरी की सेना पर आनपड़ी बैरी इस छल को न जानते थे वे एक साथ पराजित हुए उस

विजय में बहुतसी लूट मरहटों के हाथ लगी और सेवाजी अधिक प्रसिद्ध हुआ क्योंकि मरहटे इस तरह के छल को बड़ा हुनर समझते हैं परंतु छल सदा नहीं चलता निदान ऐसा हुआ कि उसे औरंगज़ेब की आधीनी करनी पड़ी और दिल्ली को गया परंतु उसको बादशाह की नौकरी अच्छी तरह न मिली बरन पीछे क़ैद भी हुआ पर चालाक अधिक था रखवालों के हाथ से निकल गया और दक्खिन में जा करके फिर उसने अपना बल और पौरुष ऐसा फैलाया कि औरंगज़ेब ने खुद उसे राजा की पदवी दी और वह अवसर को देख करके अपने राज के प्रबंध करने में लगा और उसने एक बेड़ा जहाज़ों का बनवाया इस नियत से कि समुद्र की ओर भी फ़ौज को सहाय रहे या इस विचार से कि समुद्र के किनारे की लूट से पैसा इकट्ठा हो निदान उसने दक्खिन में बहुत से देश पर अधिकार करके सन् १६८० ईसवी के बीच में ५३ बरस की अवस्था में होकरके बैकुंठ बास पाया और औरंगज़ेब भी उसके बल और पराक्रम को सराहता था और कहता था कि अवश्य सेवाजी बड़ा सिपाही था जिस समय कि मैं ने भरतखण्ड के पुराने राज्यों का नाश करना चाहा उस समय उसने अपने साहस से एक नया राज नियत कर लिया और जिस पर भी मेरी फ़ौज उन्नीस बरस तक उसके बिगाड़ने के लिये पीछे पड़ी रही परंतु उसका बिभव दिनों दिन बढ़ता गया॥

सेवाजी के मरे पीछे उसका बड़ा बेटा संभाजी गद्दी पर बैठ करके मुग़लों का साम्ना करता रहा अंत को पकड़ा गया और मुसलमान होने से इन्कार ला करके सन् १६८८ ईसवी में मारा गया और औरंगज़ेब ने अराकान को जीत करके चाटगाम को अपने राज में मिला लिया इसके पीछे बीजापुर और गोलकुंडे को जीत करके पठानों के फिर जाने का और जो कुछ लोग मत के चलाने से फिरगये थे उनका प्रबंध किया और सतारा जो मरहटों की राजधानी थी उसे अपने अधिकार में लाया परंतु मरहटे फिर भी बढ़ते चले जाते थे और हर अलंग में लूटते फिरते थे और औरंगज़ेब से एक भी न बन पड़ती थी बरन फ़ौज को रसद न मिलने से उसका बड़ा बुरा हाल था और एक बेर ऐसी तंगी में पड़ा कि मरहटों के हाथ में फंसा होता निदान उस बिपत्ति की दशा में सन् १७०७ ईसवी के बीच अहमद नगर में ६३ बरस की अवस्था में ४८ बरस राज करके मरगया ॥

मरने के समय आलमगीर ने जो रुक़्क़ह अपने पोता के नाम लिखा था वह रुक़्क़ात आलमगीर में लिखा है उसके देखने से मोह होता है कि ऐसे बादशाह धूमधांमवाले ने कैसे सोच और दुख के साथ प्राण छोड़े इस से विचारना उचित है कि दुनिया की तृश्ना कैसी थोथी और वृथा है आज तक उस से कोई नहीं अघाया और न कोई अघावेगा और जो उसके वास्ते पाप का

बीज इस जगत में बोवेगा मरते समय पछता २ के उसी की तरह रोवेगा और अंत में भलाई का फल न पावेगा ईश्वर अपराध को क्षमा करता है परंतु मनुष्य को ऐसा करना न चाहिये कि समय हाथ से जाता रहे और पस्तावा और सोच रह जावे ॥

शाहआलम और फ़र्रुख़शेर का
वर्णन ॥

शाहआलम औरंगज़ेब का बड़ा बेटा अपने दो छोटे भाइयों को जीत करके गद्दी पर बैठा और सन् १७१२ ईसवी में मरगया कुछ झगड़े के पीछे सय्यद हुसेन और सय्यद अबदुल्लह दो भाइयों ने फ़र्रुख़शेर को गद्दी पर बैठाया उस बादशाह ने बुन्दानामी सिक्खों के प्रधान को बड़े त्रास से मारा और उसके सात सौ पीरों को शूली पर चढ़ाया उसी बादशाह के समय में अंगरेज़ी राज का बीज भरतखण्ड के खेत में जमा इस तरह से कि एक बेर फ़र्रुख़शेर को कोई रोग हुआ उसके उपाव के लिये अच्छा ज़र्राह चाहिये था और भरतखण्ड के सब वैद्य उसकी बीमारी को न खो सके उस अंतर में अंगरेज़ी व्योपारियों ने जो वकील भेजे थे उनके साथ एक डाक्टर हमलटिन नामी आया था उसको जब बुलवाया ईश्वर की इच्छा से उसके हाथ से बादशाह चंगे हो गये तब बादशाह ने प्रसन्न होकर कहा तुम अपनी मिहनत का इनआम मांगो

उसने बड़े साहस से अपने लाभ के ऊपर दृष्टि नकी और जो बात कि उसकी जाति के लिये उपकारी थी वही मांगी इच्छा के अनुसार बादशाही फ़रमान धरती के लिये और अंगरेज़ों के ब्योपार चलने के लिये जिस में कोई रोक टोक न करे हो गया इसके होने से उस साहिब ने अपनी विलायत में बड़ा जस पाया क्योंकि वे वकील उसी प्रयोजन के लिये आये थे और उनकी दरख़ास्त किसी तरह क़बूल न हुई थी थोड़े दिन के पीछे फ़र्रुख़सेर को सय्यदों ने मार डाला और महम्मदशाह को गद्दी पर बैठाया उस बादशाह ने सय्यदों को उन सर्दारों की सहायता से जो उनके साथ वैर रखते थे मरवा डाला परंतु फिर भी कुछ राज का अच्छा प्रबंध न हुआ और महम्मदशाह विषय भोग में पड़ गया और राज में उपाधि उठी उधर चपक़लिचख़ां निज़ामुलमुल्क दक्खिन का सूबहदार और सआदतख़ां अवध का सूबह आज्ञा से निकल गये और इधर मरहटों ने गुजरात और मालवे को अधिकार में करके आगरे के दरवाज़े तक देश का लूटना शुरूअ किया यहां तक कि बादशाह ने तंग होकर उनको छूट लिख दी इसी दशा में नादिरशाही उपाधि उठी यह निर्दई बादशाह ख़ुरासान के किसी चरवाहे का बेटा बाप के धंधे को छोड़कर लूट करने लगा और कुछ भाग्य का बली था जो उन्हीं दिनों ईरान में ऐसे २ उत्पात हुए कि धीरे २ बलवान् हो गया

और अंत को वहां का बादशाह बन बैठा उसने एक वकील दिल्ली के बादशाह के पास भेजा था वह जलालाबाद में मारा गया इसी बात पर नादिरशाह ने हिंदुस्तान की ओर चढ़ाई की और जलालाबाद में एक २ आदमी को मारा और शहर को ख़ाक में मिलाकर लोगों को मारता और घरों में आग लगाता हुआ करनाल तक आया वहां महम्मदशाह की फ़ौज से साम्ना हुआ और नादिरशाह जीत करके सन् १७३८ ईसवी में दिल्ली आया दो दिन तक चेम रही तीसरे दिन किसी ने चर्चा उड़ाई कि नादिरशाह मारा गया यह सुनकर लोग रात में विलायतियों के ऊपर उठ खड़े हुए और शहर में एक उत्पात मचगया तब नादिरशाह ने आज्ञा दी कि जिस कूचे या बाज़ार में विलायती को मरा देखो वहां स्त्री लड़के समेत किसी को न छोड़ो निदान ठीक दो पहर तक मारना पीटना रहा और बहुधा मकान फूंक दिये उसके पीछे नादिर ने बादशाही ख़ज़ानह ज़ब्त किया और दिल्ली के बादशाह से भारी भेंट मांगी वरन ख़ज़ानों के बताने के लिये भी अन्याय किया अंत को महम्मदशाह को गद्दी पर नियत करके विलायत को चला गया और उसने अटक के पार हो करके उस नदी तक अपने राज की सीमा बांधी ॥

सन् १७४७ ईसवी में महम्मदशाह के मरे पीछे अहमदशाह गद्दी पर बैठा और उसके समय में राज छीन

होने लगा सन् १७५३ ईसवी में मंत्रियों ने उसे गद्दी से उतार करके दूसरे आलमगीर को बैठाया और अंत को निज़ामुलमुल्क के पोते उमदतुलमुल्क ने उसे भी मारडाला अब राज के मध्ये मरहटों और अफ़ग़ानों में जिनका सर्दार अहमदशाह अब्दाली था झगड़ा मचा और दूसरा आलमगीर नाम के लिये बादशाह था वह बे पौरुष हो करके औरों का आसरा लेता फिरा और मरहटों ने दिल्ली में हार करके एक लाख चालीस हज़ार सवार सिवाय कई पलटनों क़वाइदों और तोपख़ाने के इकट्ठे किये और दिल्ली की ओर चले पानीपत में अहमदशाह से सामा हुआ और ७ जनवरी सन १७६१ ई० को एक लड़ाई घोर हुई जिस में मरहटे ऐसे हारे कि केवल तीन सर्दार दक्खिन में जीते गये अहमदशाह ने लखनऊ के नव्वाब शुजाउल्-दौलह को और दूसरे सर्दारों को शाहआलम की सेवकाई के लिये ताकीद की और नजीबुलदौलह को इस बादशाही ख़ानदान का पालन सौंप करके आप काबुल की ओर लौट गया॥

जो शाहआलम दूसरा बंगाले में अंगरेज़ों के आसरे में रहा था उस समय थोड़ी फ़ौज से इस ओर आया और शुजाउलदौलह से मिल करके उसको मंत्री का अधिकार दे करके इलहाबाद पहुंचा और मरहटों से बुंदेलखंड छीन लिया परंतु पीछे ज़ाबितख़ां रुहेले के सामने मरहटों से मेल करके दिल्ली को अपने

अधिकार में लाया परंतु सन् १७८८ ईसवी में ज़ाबितखां के बेटे गुलामक़ादिर ने फिर दिल्ली लेली और बादशाह को पकड़ करके ख़ज़ाने के बताने के लिये बहुत त्रास दिया और पेशक़ब्ज़ से आंखें निकाल लीं और बादशाही ख़ानदान और शहर के रईसों में से कई को जी से मारडाला और कई को बे अन्न पानी और बड़े त्रास से मारा अंत को मरहटों के डर से जो हाथ लगा लेकर भागा परंतु घोड़े से गिर करके पकड़ा गया और जैसा उसने किया था वैसा पाया कि बड़ी त्रास दे करके उसके भी टुकड़े २ किये गये ॥

मरहटों ने शाहआलम को उसी अंधी दशा में फिर गद्दी पर बैठाया परंतु जो थोड़ासा देश उसके पास रह गया था उस में अधिकार अपना ही रक्खा और हिंदुस्तान का विस्तृत देश उत्तर में आगरे तक और पूरब और पश्चिम और दक्खिन में समुद्र तक उसके अधिकार में रहा जो कोई सर्दार अच्छा होता तो एक बड़ा राज था परंतु सेवाजी की नसल से एक छोटा राजा उनके आधीन था उसके समय में सर्दारों ने देश दबा लिया जैसे पूना में पेशवा ने और सेनापती ने नागपुर में अपनी हद्दें राज की बांधीं और सतारा के राजा से नाम के लिये स्वामी पन का वास्ता रहा इसी तरह गुजरात में गायकवाड़ भी ख़ुद राजा बन बैठे और सेंधिया और हुल्कर आदि भी राजापन का दम मारने लगे उस समय निज़ामुल्मुल्क दक्खिन में और अलीवर्दीख़ां बंगाले में

और सराजुद्दौलह लखनऊ में हुकूमत करते थे पंजाब में सिक्ख अधिकारी थे और जाट और रुहेले आदि जुदे २ अपना अधिकार करते फिरते थे जिधर देखो देश में अपनी २ स्वतंत्रता और लड़ाई मच रही थी न किसानों को चैन था न ब्योपारियों को आराम सिवाय इसके अकाल और मरी ने न्यारी ही उपाधि मचा रक्खी थी निदान हिंदुस्तान इसी बिगाड़ में था कि उसी समय साहिबान अंगरेज़ ने आ करके राज की ऐसी बुनियाद डाली कि उसके समान मुग़लों के समय में भी कभी न हुई थी ॥

चौथा अध्याय ॥

अंगरेज़ों की अमलदारी के बर्णन में ॥

धन्य ईश्वर उस परम कारण की सामर्थ अद्भुत और विचित्र है कि ज़रासे दाने के बीच से बड़े २ पेड़ सायहदार उगाता है और वायु बेबुनियाद को नाश का हेतु बना करके उसके धक्के से ऊंचे २ फले फूले मोटे ताज़े पेड़ों को जड़ से गिराता है जाना चाहिये कि सन् १६०० ईसवी में विलायत इंग्लिस्तान के कई मनुष्यों ने मिल करके कुछ पूंजी से चार जहाज़ हिंदुस्तान के ब्योपार करने के इरादे पर बनवाये और मलिकह एलीज़बट जो उस समय उस मुल्क की अधिकारी थी उसने उनको पूर्व हिंदुस्तान के ब्योपारियों की

कंपनी की पदवी दे करके बादशाही फ़रमान दिया इस आशय से कि १५ बरस तक हमारे राज का कोई मनुष्य इनके सिवाय उस देश में व्योपार न करे इस तरह उस कंपनी अर्थात् व्योपारियों के जहाज़ हिंदुस्तान में आये और उनका व्योपार अवधि के बीतजाने पर भी नये फ़रमानों के द्वारा बहाल रहता चला आया सन् १६१२ ईसवी में जहांगीर बादशाह की आज्ञा से उनकी कोठियां सूरत और अहमदाबाद और खंभात में बनीं उस के पीछे कारोमंडल के किनारे पर भी कोठियां उनकी होगईं सन् १६४० ईसवी में मदरास के राजा से आज्ञा लेके क़िलअ के तौर की एक कोठी मदरास में बनी उसका नाम फ़ोर्ट सेंट जार्ज रक्खा उन्हीं दिनों शाहजहां की आज्ञा से एक कोठी हुगली में भी बनी और बंबई पुर्तगेज़ों के पास थी सो जब उनकी शाहज़ादी चार्लिस दूसरी इंगलिस्तान के बादशाह को ब्याही गई तब उसके दहेज़ में वह मकान भी अंगरेज़ों के हाथ आ गया और सन् १६६८ ईसवी में कंपनी को सौंपा गया और अज़ीमुलशान के समय सन् १६८८ ईसवी में उन्हों ने सोनान्ती और कलकत्ता और गोबिन्दपुर की ज़मींदारी ख़रीदी और फ़र्रुख़शेर ने सन् १७१७ ईसवी में उनको सिवाय कई बातों के ख़रीदने ३७ ज़िलओं के आज्ञा दी जैसे उस समय उन्हों ने एक क़िलअ कलकत्ते में फ़ोर्ट विलियम के नाम से बनाया और हिंदुस्तानी रईसों में आपस में झगड़े और फ़साद

रहते थे और उन में से एक दूसरे के प्रतिकूल सहाय को चाहता था इसलिये उसके सिवाय अपनी चौकसाई के लिये और भी उनको फ़ौज रखनी पड़ी और कारोमंड के किनारे पर फ़रासीसों की कोठियां थीं उन से और अंगरेज़ों से सदा बैर रहता था कुछ इस कारण से कि विलायत में उनकी लड़ाई हो रही थी और कुछ इस्से कि एक के बैरी को एक सहाय देनी थी इसीतरह एक बेर फ़रासीसों के सर्दार ने चाहा कि निज़ामुलमुल्क के पोते मुज़फ़्फ़रजंग को दक्खिन का सूबहदार और उसके क़रावती चंदर साहिब को करनाटक का नव्वाब बनावें और इंगलिस्तान के लोगों ने निज़ामुलमुल्क के बेटे नाज़िरजंग को दक्खिन की सूबहदारी के लिये और महम्मदअली को करनाटक की नव्वाबी के लिये सहायता दी इस लिये दोनों में लड़ाइयां हुईं निदान फ़रासीस हार करके ख़राब हो गये और मदरास के इलाक़े में बहुत देश अंगरेज़ के अधिकार में आगया इस अंतर में सराजुलदौलह बंगाले का सूबह अंगरेज़ों की छेड़ से कलकत्ते पर फ़ौज चढ़ा लाया और सन् १७५६ ईसवी में क़िलअ़ को जीत करके सौदागरी का माल बरबाद करदिया बहुत से साहिब नावों पर चढ़ करके निकल गये परंतु १४६ को उसने पकड़ करके रात भर एक बहुत ही तंग मकान में क़ैद रक्खा जिस में तंगी और गर्मी से सवेरे केवल २३ आदमी जीते निकले

बाक़ी सब मरगये जब यह ख़बर मदरास में पहुंची वहां से करनेल कलायू फ़ौज लेकरके आया और उसने बैरियों के हाथ से क़िलअ लेलिया इस बिजय से जो लोग नव्वाब से फिरे थे वे मंसूबह करके साहिबान अंगरेज़ से आमिले करनेल कलायू उनके साथ हुआ पुलासी के मैदान में लड़ाई ठनी नव्वाब सराजुलदौलह हार करके भागा और राजमहल में मारा गया और मीर जाफ़र बंगाले का नव्वाब हुआ पर अंत को साहिबान अंगरेज़ के निबंध को पूरा न कर सका इस लिये उन्हों ने उसकी जगह उसके जमाई क़ायमख़ां को गद्दी पर बैठलाया और जब उसने चाहा कि उनके सौदागरी हक़ों को ज़प्त करें तो दोनों ओर से वैमनस्य हुई और मार पीट की नौबत पहुंची नव्वाब हारा और मीरज़ाफ़र को अंगरेज़ों ने फिर गद्दी पर बैठाया परंतु लखनऊ के नव्वाब शुजाउलदौलह और शाहआलम दूसरे ने मीर क़ासिम को दबाया इसलिये अंगरेज़ों ने उन पर चढ़ाई करके इलहाबाद और लखनऊ लेली तब नव्वाब ने लड़ाई का ख़र्च दे करके मेल किया और बादशाह ने सूबह बंगालह और बिहार और उड़ीसह की दीवानी उनको सौंपी और जो सूबे नाम को दिल्ली के राज में गिने जाते थे उनके बीच जहां २ उन्हों ने बिजय पाई थीं वे सब जगह उनके अधिकार में बहाल रक्खीं यह बात सन १७६५ ईसवी की है और उसी समय से साहिबान अंगरेज़ के राज्य का

हिंदुस्तान में प्रारंभ हुआ और जब इंगलिस्तान के बादशाह ने देखा कि कंपनी ने बहुतसा देश हिंदुस्तान में अपना करलिया है तब सन् १७७३ ईसवी में पार्लीमेंट अर्थात् प्रतिष्ठित और मंत्रियों की सभा से यह नियत हुआ कि सब जंगी और मुल्की कामों की इत्तलाअ मंत्रियों को दी जावे और बादशाह की ओर से एक न्याय की सभा नियत हो जिसका नाम सोपरिम्कोर्ट हो और बंबई और मदरास और बंगालह इन तीनों हातों पर एक गवर्नर जनरल इंगलिस्तान के बादशाह की इच्छा से नियत हो और उसके साथ कौन्सिल भी रहे इस बिचार के अनुसार पहला गवर्नर जनरल वारनहेसटंग नियत हुआ उसके समय में कंपनी बहुत तंग हाल थी और सब हिंदुस्तानी रईस उस पर दांत रखते थे दक्खिन में करनाटक के सिवाय उत्तर की सरकारें भी निज़ामुलमुल्क की दी हुई कंपनी के पास थीं और इसलिये उसने दी थीं कि समय कुसमय अंगरेज़ सहाय किया करें उन सर्कारों के कारण से हैदरअली के साथ झगड़े उठे जो मैसूर के राजे का राज दाब बैठा था वारनहेसटंग ने सब कठिनाइयों के होने पर भी हैदरअली को पराजय किया वरन मरहटों को भी मार हटाया और लखनऊ के नव्वाब आसफ़उलदौलह से बनारस की ज़मींदारी लेली उसके पीछे से सन् १७८६ ईसवी में लार्ड कारनवालिस गवर्नर जनरल हुआ उसके समय में हैदराबाद और लखनऊ के नव्वाब

से सुलह का अहदनामह नये सिरे से हुआ और टीपू सुलतान से लड़ाई पड़ी सुलतान ने अपना बहुतसा देश साहिबान अंगरेज़ों को और पेशवा और निज़ामुल्-मुल्क को दे करके जो उनकी संगति में थे सुलह कर ली इसी लार्ड की हुकूमत में बहुधा माली और मुल्की क़ानून जो अब तक चले आते हैं वे बन करके जारी हुए थे सन् १७९३ ईसवी में जब वह विलायत गया तब सरजानशोर गवर्नर जनरल हुआ उसने सब से सुलह रक्खी और उसके पीछे सन् १७९८ ईसवी में मारकोइसवलज़ली आया टीपू सुलतान से लड़ाई हुई उसने श्रीरंगपट्टन जीत लिया और टीपू मारा गया और सन् १७९८ ईसवी में मैसूर का राज वहीं के पुराने राजे को सौंपा गया उसके पीछे लखनऊ के नव्वाब से अहदनामह नया हुआ और उसने कुछ अंगरेज़ी फ़ौज अपने यहां रखने के लिये पूर्वी कई प्रदेशों समेत अंतर्वेद अंगरेज़ों को दिया फिर मरहटों के सर्दार सेंधिया और राघोजी भोसलह बरार के राजे से लड़ाई हुई दक्खिन में जनरल बलज़ली ने बैरी से जीत पाई और उत्तर में लार्ड लीक साहिब बलवान् हुआ यहां पश्चिम में दूाब और दिल्ली और आगरा अंगरेज़ों के हाथ आया और वहां अर्थात् दक्खिन में पूरब की ओर गंगा और पश्चिम की ओर गुजरात तक अधिकार हुआ उसके होते ही हुलकर की लड़ाई का प्रारंभ हुआ उसने दूाब में आ करके लूट की

परंतु लार्ड लेक ने सिक्खों के देश तक उसे कहीं दम न लेने दिया और उसके सारे राज में अंगरेज़ी अमल हो गया परंतु सुलह के पीछे सब उसका देश उसे मिल गया सन् १८०५ ईसवी में लार्ड कारनुयस फिर आया उसके समय में हर जगह चैन रहा परंतु थोड़े दिन में वह मरा और सर जारज बारलो उसका क़ायम मक़ाम हुआ सन् १८०७ ईसवी में लार्ड मंटू हिंदुस्तान में आया वह फ़रासीसों की रही सही हिम्मत के तोड़ने में लगा जैसे एक बेड़ा जहाज़ों का बना और उस से फ्रांस और मेरीशस और जावा की बहुत चौड़ी जो टापू हैं वे जीती गईं और सन् १८१३ ईसवी में मारकोइस हेसटंग गवर्नर जनरल हुआ पिछले गवर्नर जनरल हिंदुस्तानी रईसों के बिगाड़ करने में न पड़ते थे इस से उन्हों ने आपस में झगड़ा करना शुरूअ किया बरन नटखट होकर अंगरेज़ी राज में भी हाथ मारने का बिचार करने लगे उत्तर में गोरखों ने उपाधि उठाई इसलिये अंगरेज़ी सिपाह ने हिमालय पहाड़ को काट करके बहुतसा देश उनका ले लिया और दक्खिन में पिंडारों ने मरहटों की सहायता से सिर उठाया था वे भी अपने किये को पहुंच करके मारे गये और उसी बीच में पेशवा और नागपुर के राजे ने स्वतंत्र हो करके सिर उठाया निदान वे भी सन् १८१८ ईसवी में पकड़े गये और हुलकर के सर्दारों ने भी लड़ाई का सामान किया परंतु हार गये और देश भी खो बैठे परंतु जब सलाह हो

गई तो अंगरेज़ी सर्कार ने पूना और कुछ मरहटों का देश तो रहने दिया बाक़ी सब इलाक़े सेवाजी की संतान सतारावाले राजे को दे दिये और आपा साहिब नागपुर का राजा जो क़ैद से भाग गया था उसकी जगह अगले राजे का पोता गद्दी पर बैठाया गया और हुलकर के बेटे और राजपूत सर्दारों को सर्कार ने अपने आश्रय में रक्खा इस तरह के उपायों से सारा हिंदुस्तान अंगरेज़ी सर्कार के आधीन हो गया सन् १८२३ ईसवी के अंत में लार्ड अमहरस्ट विलायत से आया और सन् १८२४ ईसवी में ब्रह्मा में सर्कार की लड़ाई हुई सर्कारी फ़ौज रंगून में हो करके आवा के पास पहुंची और ब्रह्मावालों ने सन् १८२६ ईसवी में आसाम और अराकान और तनासरम के सूबे देकर के सलाह की और उसी बरस के प्रारंभ में भरतपुर भी टूटा सन् १८२७ ईसवी में लार्ड विलियम बेंक गवर्नर जनरल हुआ उसने पांच बरस के अंतर में बहुतसी लाभकारी बातें निकालीं और उसने देश का प्रबंध भी अच्छी रीति से किया और सती होने की चाल भी उसी के समय से मिटी और सर चारलिस मटकलफ़ साहिब की क़ायम मक़ामी के समय में हिंदुस्तान के समाचार पत्र लिखनेवालों को समाचार के लिखने की स्वतंत्रता दी गई ॥

सन् १८३६ ईसवी में लार्ड आकलंड आया उसने रूसियों की रोक के लिये अफ़ग़ानों से लड़ाई टानी

और उसी अंतर में चीनवालों से भी बैर पड़ा सन् १८४२ ईसवी में अफ़ग़ानों से लड़ाई हुई उस में फ़ौज अंगरेज़ी बहुतसी तलवार की धार पर चढ़ी और उसी बरस लार्ड अलनबरा विलायत से आया उसकी हुकूमत में अफ़ग़ानों और चीनियों से सलाह होगई और ग्वालियर पर फ़ौज की चढ़ाई हुई जिस में सेंधिया की फ़ौज हारी परंतु रानी ने सलाह करके वह राज बचा लिया लार्ड अलनबरा के समय में सिंध में बलोच सर्दारों ने सिर उठाया उनको जनरल नेपिर साहिब ने जीत करके उस सारे देश को सर्कारी राज में मिला दिया और कितने वहीं साहिब वहां के गवर्नर नियत हुए परंतु पीछे वह इलाक़ह इहातह बंबई में मिलगया लार्ड अलनबरा के जाने पीछे लार्ड हारडंक हिंदुस्तान में आये ये साहिब बहुत बुद्धिमान् और प्राचीन थे और यह बिचार करके आये थे कि हिंदुस्तान में सब रईसों से सलाह रक्खें परंतु ईश्वरेच्छा यों थी कि सिक्खों का नाम निशान संसार से जाता रहे और पंजाब का सारा देश इस सर्कार के आधीन हो जावे सिक्खों ने थोड़ी अवस्थावाले लड़के को गद्दी पर देखकर के प्रतिकूलता का हाथ बढ़ाया और मर्याद से पैर ऐसा चलाया कि अपने स्वामी की सेवकाई से बिमुख हो गये वरन जिस सर्कार की देहली का आप ही प्रताप रखवाला बन रहा है उस से साहस करने का बिचार करने लगे तो लार्ड हारडंक को लाचार हो करके फ़ौज को चढ़ाना

पड़ा और फ़ीरोज़शाह और मुदकी और बद्वाल और फुल्लौर आदि में बड़ी २ लड़ाइयां हुईं सिक्खों ने हार के ऊपर हार खाई यहां तक कि बिजयी सेना लाहौर तक पहुंची उस समय लार्ड हारडंक ने दयालुता से राजा की थोड़ी अवस्था देखकर झगड़ालुओं को राज से निकाल दिया और सिक्खों का राज बहाल रक्खा उस समय लड़ाई के ख़र्च के पलटे सतलज और ब्यासा का दूाबह सर्कार अंगरेज़ के अधिकार में रहा और रज़ीडंटी लाहौर में नियत की गई और लार्डहा-रडंक ने इस बिजय के पीछे शाहअवध से नये अहद-नामह करके उस राज को भी बहाल रक्खा और कई काम नेकनामी के किये उन में से गंगा की नहर लाने का विचार उन्हीं के समय में पक्का हुआ था और सर-रिश्तह तालीम देहाती की बुनियाद भी उसी समय जमाई गई थी सन् १८४७ ईसवी के अंत में लार्डडल-हौसी हिंदुस्तान में आये उनके समय में सिक्खों का राज उनकी नटखटी से बिनाश हो गया और सारे पंजाब में सर्कारी राज होगया उसके पीछे ब्रह्मावालों से लड़ाई का प्रारंभ हुआ जिस में रंगून और पैगू का सूबह जीत लिया और बर्तमान समय तक उस देश में फ़ौज नियत है और वह लड़ाई अभी तक समाप्त नहीं हुई ॥

अवशेष

यह जानना उचित है कि सर्कार अंगरेज़ी में हिंदुस्तान के प्रबंध के लिये दो तरह के हाकिम हैं एक ज़ाबतह दूसरे आमिल ज़ाबतह वे हैं जो इंगलिस्तान में हैं और वे भी दो प्रकार के हैं एक तो ठेकहदार ब्योपारी जिनको सर्कार कंपनी बहादुर कहते हैं दूसरे बादशाही काजकामी और कंपनी की जमात में बहुत लोग हैं परंतु उन में से चौबीस प्रबंधकर्ता कामों के हैं उनकी मंज़ूरी के बिना किसी काम का भी बिचार नहीं ठहरता और उन्हीं को साहिबान कोर्ट आफ़डाइरक्टर्स बोलते हैं सब काम उन्हीं के यहां से नियत होते हैं परंतु गवर्नमेंट अर्थात् कार्याध्यक्ष और कमांडरनचीफ़ अर्थात् सेनापति के नियत करने का अधिकार बादशाह को है और एक हाकिम बड़ा बोर्ड आफ़ कंटरूल बादशाह की ओर से नियत है इसलिये कि गवर्नमेंट हिंदुस्तान और कोर्ट आफ़ डाइरक्टर्स के बीच जो लिखा पढ़ी हो सब उसके देखने के लिये भेजी जावे और हिंदुस्तान में अपने २ इलाक़े के प्रबंध का सारा इख़तियार कौंसिल और जहां कौंसिल नहीं है उस समेत गवर्नर को खुद है और सब गवर्नरों पर एक गवर्नर जनरल नियत है और कौंसिल के अधिकारी साहिब हिंदुस्तान के बड़ी पदवीवाले साहिबों से चुने जाते हैं और माली और मुल्की कामों में विलायत से बड़े घराने के और विद्यावान् नवयौवन साहिब आनकर नियत होते हैं

श्रार वे क्रम २ से बड़े २ अधिकारों पर पहुंचते हैं श्रार यही रीति सेनावाले साहिबों में भी जारी है श्रार बंगाला श्रार मदरास श्रार बंबई इन तीनों प्रेसीडेंसियों अर्थात् हातों में न्यारी २ फ़ौज नियत है उस में कुछ फ़रंगस्तानी श्रार बहुत से हिंदुस्तानी हैं परंतु हिंदुस्तानी सिपाह के भी सर्दार अंगरेज़ हैं श्रार हिंदुस्तान में सारी फ़ौज लगभग दो लाख आदमियों के होगी ॥

॥ इति ॥

सूर्य वंशी राजा

इक्ष्वाकु	पृषदश्व	अयुताश्व	द्वारिका
विकुक्षी	हर्यश्व	ऋतुपर्ण	अहीनज
पुरंजय	वसुमान्	सर्वकाम	कुरु
काकुस्थ	त्रिधन्वा	सुदास	परिपात्र
अनेनास	त्रयारुण्य	कल्माषपाद	दल
पृथु	त्रिशंकु	असमक	छल
विश्वगश्व	हरिश्चंद्र	हरिकवच	उक्थ
आर्द्र	रोहिताश्व	दशरथ	वज्रनाभि
भाद्रआर्द्र	हारीत	इलिवथ	शंखनाभि
युवनाश्व	चुंचु	विश्वासह	व्युथिताभि
श्रवस्थ	विजय	खट्वाङ्ग	विश्वासह
वृहदश्व	रुरुक	दीर्घवाहु	हिरण्यनाभि
कुवलयाश्व	वृक	रघु	पुष्य
दृढाश्व	वाहु	अज	ध्रुवसंधि
हर्यश्व	सगर	दशरथ	अपवर्म
निकुम्भ	असमञ्जस	श्रीराम	शीघ्र
संकटाश्व	अंशुमान्	कुश	मरु
प्रसेनजित्	दिलीप	अतिथि	प्रसवश्रुत
युवनाश्व	भगीरथ	निषमध	सुसंधि
मान्धाता	श्रुत	नल	आमर्ष
पुरुकुत्स	नाभाग	नाभ	महाश्व
त्रिशदश्व	अम्बरीष	पुण्डरीक	वृहदवाल
अनारण्य	सिन्धुद्वीप	क्षेमधन्वा	वृहदशान

उरुक्षेप
वत्स
वत्सव्यूह
प्रतिव्योम
देवकर
सहदेव
वृहदश्व
भानुरत्न
सुप्रतीक
मरुदेव
सुनक्षत्र
केशीनर
अन्तरिक्ष
सुवर्ण
अमित्रजित्
वृहद्राज
धर्म
कृतञ्जय
रणञ्जय
सञ्जय
शाक्य
क्रोधदान
अतुल
प्रसेनजित्

क्षुद्रक
कुन्दक
सुरथ
सुमित्र

चंद्रवंशी

पुरूरवा
आयु
नहुष
ययाति
पुरु और यदु

पुरुकाकुल

जन्मेजय
प्रचिन्वात
प्रवीर
मनस्य
भयद
सुद्युम्न
वाहुगर
सनयाति
धनयाति
रौद्राश्व
रन्तिनर
तंस
दुष्यन्त

भरत
भारद्वाज
भवनमन्यु
वृहत्क्षत्र
सुहोत्र
हस्ती
अजमीढ़
ऋक्ष
सम्वर्ण
कुरु
जन्हु
सुरथ
विदूरथ
सार्वभौम
जयसेन
अर्णव
अयुतायु
अक्रोधन
ऋक्ष
भीमसेन
दिलीप
प्रतीप
शांतनु
चित्राङ्गद

धृतराष्ट्र
दुर्योधन

पाण्डुकुल

शांतनु
विचित्रवीर्य
पाण्डु
युधिष्ठिर
परीक्षित
जन्मेजय
शतानीक
अश्वमेधधात
निचक्र
उष्ण
चित्ररथ
धृतमान्
सुसेन
सुनीथ
रिच
नृचक्षु
सुखवत
पारिप्लव
सुनय
मेधावी
नृपञ्जय

मृदु	बिदर्भ	विदूरथ	क्षेमय
तिग्म	क्रथ	सुर	सुवरथ
बृहद्रथ	कुन्ति	समन	धर्म
बसुदान	वृष्णि	प्रतिक्षेत्र	सुशम
सतानीक	निर्वृति	स्वायंभुव	दृढ़सेन
उद्यान	दशार	हरिदीक	सुमन्त
अहीनर	बिजामन	देवमेधस्	सुवल
निर्मित्र	जीमूत	सुर	सत्यजित्
यदु का बंश	विकृति	वसुदेव	विस्वजित्
यदु	भीमरथ	श्रीकृष्ण	रिपुंजय
क्रोष्ट्रा	नवरथ	**मगधकेराजा**	**शुनककाकुल**
वृजीनवान	दशरथ	ईसा से १४००	ईसा से ६१५
स्वही	शकुनि	वर्ष पहले	वर्ष पहले
रुसद्गु	कुसम्भ	सहदेव	प्रद्योत
चित्ररथ	देवरथ	सोमपी	पालक
सरविन्दु	देवक्षेत्र	श्रुतमान	विशाख्य
प्रथुश्रवस	मधु	अयुतायु	जनक
तमस	अनवरथ	निर्मित्र	नन्दिवर्धन
उशनस	कुरुवत्स	शुकसत्र	शिशुनाग
सितेयंसू	अनुरथ	बृहत्कर्म	का कुल
रुक्मा	पुरुहोत्र	सेनजित्	ईसा से ६६७
कवलह	अंगस	सुतंजय	वर्ष पहले
परावृत	सात्वत	विप्र	शिशुनाग
जैमघ	भजमान	शुचि	काकवर्ण

क्षेमधर्म
क्षेत्रौज
वेदमिश्र
अजातशत्रु
दरभक
उदयाश्व
नन्दीवर्धन
महानन्दि

नन्द का कुल
ईसा से ४१५ वर्ष पहले
महानन्द
नंद की अष्ट कुलीं
मौरीकुल
चंद्रगुप्त
ईसा से ३१५ वर्ष पहले
विन्दुसार
अशोक
सुपास
दशरथ
सौगत
सलोसुक

सोमशर्म्म
सतधन्वा
वृहद्रथ

सुंगका कुल
ईसा से १७८ वर्ष पहले
पुष्यमित्र
अग्निमित्र
सुज्येष्ट
वसुमित्र
आरद्राक
पुलिंदक
घोषवसु
वज्रमित्र
भागवत
देवभूति

कन्व का कुल
ईसा से ६६ वर्ष पहले
वसुदेव
भूमित्र
नारायण
सुशर्मा

अंध्र का कुल
ईसा से २१ वर्ष पहले
सिपरक
कृष्ण
सातकरनी
लम्बोदर
इवेलक
मेघस्वाति
पतुमान
अरिष्टकर्म
रल
पुत्तालक
प्रवलसेन
सुंदर
सातकरनी २
चकोरा
सातकरनी ३
सेवस्वाति
गोमतीपुत्र
पुलोमान
सातकरनी ४
शिवाश्री
शिवस्कन्ध
यजनश्री

विजय
चंद्रश्री
ईसा से ४२८ वर्ष पीछे
पुलोमार्चि
अजमेर के राज
अनलचौहान
ईसा से ५०० वर्ष पीछे
सामलदेव
महादेव
अजयसिंह
वीरसिंह
विन्दसुर
बैरविहान्त
ई ६६५ वर्ष पीछे
माणिक्यराव
महासिंह
चंद्रगुप्त
प्रतापसिंह
मोहनसिंह
सेतराय
नागहस्त
लोहधार

वीरसिंह २	माधवसेन	यशोविग्रह १०२४
विबुधसिंह	केशव	महीचन्द्र १०४८
चंद्रराय	सुरसेन	चन्द्रदेव १०७२
हरिहरराय	नारायण	मदनपाल १०९६
वसन्तराय	लक्ष्मण	गोविंदचन्द्र ११२०
वलिअङ्गराय	स० १२०० ई०	विजयचन्द्र ११४६
प्रमथराय	लक्ष्मन्य	जयचन्द्र ११६८
अङ्गराय	**गुजरात के राजा**	**उदयपुर के राणा**
स० १०२० ई०	सन् ९१० ईसवी	सन् ७२८ ईसवी
वीसलराय	मूला	वप्पा
सारंगदेव	चामुंड	गुहिल
अनदेव	वल्लभ	भोज
जैसिंह	दुर्लभ	कालभोज
आनन्ददेव	भीम	भर्तरीभट्ट
सोमेश्वर	कालदेव	समहायका
स० ११८७ ई०	स० १०६४ ई०	खुमान
प्रथीराज	सिद्ध	अल्लात
बङ्गाले के राजा	कुमारवल	नरवाहन
सन् १०६३ ईसवी	अजयपाल	स० ९६८ ई०
सुखसेन	मूल	शक्तिवर्म
बलालसेन	स० १२०६ ई०	शुचिवर्म
लक्ष्मनसेन	भीमदेव	नरवर्म
	कन्नौज के राजा	कीर्तिवर्म

बैरिसिंह		रतना	१५३०	उसकी ८ पीढ़ीं	
बिजयसिंह		बिक्रमाजीत	१५३५	पृथीराज	
अरिसिंह		बनवीर		पूरनमल्ल	१५५०
बिक्रमसिंह	१२०६	उदयसिंह	१५४१	भगवानदास	
सामन्तसिंह		प्रताप		मानसिंह	१५६२
कुमारसिंह		अमर		जैसिंह	१६१५
मथनसिंह		करन	१६२१	इनकी २ पीढ़ीं	
पदमसिंह		जगतसिंह	१६२८	सवाईजैसिंह	१६६०
जैत्रसिंह		राजसिंह	१६२६	ईसरीसिंह	१७४२
तेजसिंह		जैसिंह	१६८१	माधोसिंह	
सं० १२८६ ई०		अमर	१७००	पृथीसिंह	
समरसिंह		संग्रामसिंह	१७१६	प्रतापसिंह	
करण		जगसिंह	१७३४	जगतसिंह	१८०३
राहुप		प्रताप	१७५२	जैसिंह	१८१८
लक्ष्मनसिंह		राजसिंह	१७५५	जोधपुर वा माड़-	
अजयसिंह		अरसी	१७६२	वाड़ के राजा	
हमीर		हमीर	१७७२	सीवाजी	११५५
खेतसिंह	१३६५	भीमसिंह	१७६६	आस्थान.	११५६
लखगुणा	१३७३	जीवनसिंह	१८२८	इनकी ८ पीढ़ीं	
मोकलजी		राजा ढूंढार		चोंड़ाजी	१३८१
खुम्बो	१४१६	वा जैपुर के		जोधा	१४२६
ऊदा	१४६६	सुरराजा	६६६	इनकी ३ पीढ़ीं	
रायमल	१४७४	दूलेरायकी ३ पीढ़ीं		मालदेव	१५३१
सांगा	१५०९	पूजनदेव	११८६	चन्द्रसिंह	१५७१

उदयसिंह	१५८४
इनको १ पीढ़ी	
गर्जसिंह	
जसमंतसिंह	१६३६
अजीतसिंह	१७०७
अभयसिंह	१७३६
बख़्तसिंह	१७५३
विजयसिंह	१७६१
भीमसिंह	१७६२
मानसिंह	१८०३
तख़्तसिंह	

विजयनगर के राजा

वक्काराय	१३४०
हरिहर	१३८५
देवराय	१४२६
मल्लिकार्जुन	१४५१
विरूपाक्ष	१४७३
नरसिंह	१४८७
कृष्ण	१५०८
अच्युत	१५३०
सदाशिव	१५४२
रामदेव	१५४०

राजा उड़ीसा के गंगाबंसी वा गजपती

सारंगदेव	१११३
गंगेश्वरदेव	११५१
अनंगभीम	११७४
राजेश्वर	१२०१
नरसिंह	१२३६
इनको ११ पीढ़ी	

गजपती का दूसरा वंश

कपिलेन्द्र	१४५१
पुरुषोत्तम	१४७८
प्रतापरुद्र	१५०३

गजपती का तीसरा वंश

गोबिन्ददेव	१५३३
प्रतापचक्र	१५४०
मुकन्ददेव	१५५०

ग़ज़नवी मुसलमान बादशाहों के नाम

गद्दी बैठने का सन ॥

सुबुक्तगीं	९७७	बैराम	१२४०
इस्माईल	९९०	मसऊद	१२४१
महमूद	९९७	नासुरुल्दीन	१२४६
महम्मद	१०३०	ग़यासुल्दीनबलवन	१२६६
मसऊद	१०३०	कोक़बाद	१२८६
दूसरा मसऊद	१०४९	तुर्कख़ल्जी २	
अबुलहुसनअली	१०४९	जलालुल्दीन	१२८८
अबदुलरशीद	१०५१	अलाउल्दीन	१२९५
फ़र्रुख़ज़ाद	१०५२	उमर	१३१६
इब्राहीम	१०५८	मुबारिक	१३१७
तीसरा मसऊद	१०९८	तुर्कतग़लक ३	
अरसलां	१११८	ग़यासुल्दीन	१३२१
बैराम	११२१	महम्मद	१३२५
ख़ुसरव	११५२	फ़ीरोज़	१३५१
ख़ुस्रूमलिक	११६०	दूसरा ग़यासुल्दीन	१३८८
दिल्ली के बादशाह		अबूबकर	१३८९
कुतुबुल्दीन	११९३	दूसरा नासुरुल्दीन	१३८९
आराम	१२१०	हुमायूं	१३९४
इल्तमिश	१२११	महमूद	१३९४
रुकनुल्दीन फ़ीरोज़	१२३६	सय्यद ४	
रज़ीयहबेगम	१२३६	सय्यद ख़िज़रख़ां	१४१४

सय्यद मुबारिक १४२१
सय्यद महम्मद १४३५
सय्यद अलाउल्दीन १४४५

लोदीअफ़ग़ान ५

बहलूल लोदी १४५०
सिकन्दर १४८८
इब्राहीम १५१०

मुग़ल ६

बाबर १५२६
हुमायूं १५३०

अफ़ग़ान सोर ७

शेरशाह १५४२
शलेमशाह १५४५
फ़ीरोज़शाह १५५३
महम्मद १५५३
सिकन्दर १५५४

मुग़लदोबारह ६

हुमायूं १५५५
अकबर १५५६
जहांगीर १६०५
शाहजहां १६२८
औरंगज़ेबआलमगीर १६५८
बहादुरशाह १७०७
जहांदारशाह १७१२
फ़र्रुख़शेर १७१३
रफ़ीउल्दर्जात १७१०
महम्मदशाह १७१८
अहमदशाह १७४०
आलमगीर दूसरा १७५३
शाहआलम १७६१
दूसरा अकबर १८०६
बहादुरशाह —

अवध

सआदतअलीख़ां —
नव्वाबवज़ीर —
सआदतजंग —
शुजाउल्दौलह १७५६
आसफ़ुल्दौलह १७७५
सआदतअली १७९८
ग़ाज़ियुल्दीन, हैदरशाह १८१४
नसीरुल्दीनहैदर १८२८
महम्मदअलीशाह —
अहमदअलीशाह —
वाजिदअलीशाह —

हैदराबाद

आसफ़जाह, निज़ामुलमुल्क १७१०

नासिरजंग	१७४०
मुज़फ़्फ़रजंग	१७५७
निज़ामअली	१७६३
सिकन्दरजाह	१८१३

मरहटह

सेवाजी	१६५१
सुंभाजी	१६८०
राजाराम	१६८९
साःवजी	१७०७
बालाजी	१७१२
बाजीराव	१७२०
बालाजीबाजीराव	१७४०
रामराजा	१७५०
माधोराव पेशवा	१७६१
रघुनाथ राव	१७७३
माधोराव नारायण	१७७४
साऊ राजा	१७७८
बाजीराव पेशवा	१७९५
प्रतापसिंह नारायण	१८१८

ग्वालियर

रानाजी	१७१६
जियापाजी	१७५०
माधोजी	१७६१
दौलतराव	१७९९
झनकूराव	१८२७
जियाजी	१८५४

इंदौर

मल्लहरराव	१७२८
मल्लेराव	१७६५
अहलियाराव	१७६६
टीकाजी हुलकर	१७९५
जस्वंतराव	१७९८
मल्लहराव	१८११

कलबर्गह

अलाउल्दीनहुसन	१३४७
महम्मद	१३५८
मजाहिद	१३७५
दाऊद	१३७८
महमूद	१३८८
ग़यासुल्दीन	१३९७
शिरमुल्दीन	१३९०
फ़ीरोज़	१३९७
अहमद	१४२२
दूसरा अलाउल्दीन	१४३५
हुमायूं	१४५७
निज़ाम	१४६१
दूसरा महम्मद	१४६३
दूसरा महमूद	१४८२

दूसरा अहमद	१५१८
तीसरा अलाउद्दीन	१५२०
वलीउल्लह	१५२३
कलीमुल्लह	१५२६

बीजापुर के बादशाह

यूसुफ़ आदिलशाह	१४८६
इस्माईल	१५१०
इब्राहीम	१५३४
अली	१५५७
दूसरा इब्राहीम	१५८१
महम्मद	१६२६
अलीआदिल	१६६०

अहमद नगर के शाह

अहमद निज़ामशाह	१४६०
बुरहान	१५००
हुसेन	१५५३
मुर्तज़ा	१५६५
मीरांहुसेन	१५८६
इस्माईल	१५८६
दूसरा बुरहान	१५८६
इब्राहीम	१५६४
बहादुर	१५६६
दूसरा मुर्तज़ा	१६००

गोलकुंडे के शाह

कुतुबशाह	१५०७
जमशैद	१५४८
सुबहान	——
इब्राहीम	१५५०
महम्मद	१५८०
अबुलहुसेन	१६७२

जौनपुर के शाह

ख़्वाजह जहां	१३८४
मुबारिक शाह	१३६६
इब्राहीम शाह	१४०१
महमूद शाह	१४४०
महम्मद शाह	१५५७
हुसेन	१४५७

बंगालेवाले

फ़ख़रुल्दीन	१३३८
अलाउल्दीन	१३४०
हाजिउल्यास	१३४१
सिकन्दर	१३५८
ग़यासुल्दीन	१३६७
सुलतानुल्सुलातीन	१३७४
शमशुल्दीन	१३७४
जलालुल्दीन	१३६२

अहमद	१४००	महमूद	१४६३
नसीर शाह	१४२०	मुज़फ़्फ़र	——
बारीक	१४२८	अलाउद्दीन	१४६०
यूसुफ़	१४३५	नसीब	१५२३
सिकन्दर	१४५०	बहादुर	१५४२
फ़तह	१४५७	सलेमान	१५४६
शहज़ादह	१४८१	बहज़ाद	१५७३
फ़ीरोज़	१४८१	दाऊद	१५७०

समाप्त